निवेदन ।

इस पदसंग्रहमें बुधजनजीके बनाए हुए केवल उन्हीं पदोंको छपाया है, जो बुधजनविलासमें संग्रह हैं । जहा तक हम जानते है, बुधजनजीके पद इनके सिवाय और नहीं होंगे । यदि इनके अतिरिक्त और कोई पद होंगे और हमें कहींसे प्राप्त हो सकेंगे, तो हम उन्हें इसकी द्वितीयावृत्तिमें शामिल कर देंगे ।

बुधजनजीकी कवितामें मारवाड़ी शब्दोंकी मात्रा बहुत अधिक है और संशोधककी मातृभाषा मारवाड़ी नहीं है; इसलिये यद्यपि यह पदसंग्रह जैसा चाहिये वैसा शुद्ध नहीं छप सका होगा, तौ भी इसके संशोधनमें मारवाड़ी सज्जनोंकी सहायतासे भरसक परिश्रम किया गया है । इस बातपर भी ख्याल रक्खा गया है कि, रचयिताके प्रयोग किये हुए शब्दोंमें कुछ लौट फेर न हो जावे । मारवाड़ी वा अन्य किसी भाषाके किसी शब्दको सुधार कर प्रचलित हिन्दीमें वा शुद्धसंस्कृतरूपमें करनेकी कोशिश नहीं की गई है । स्थान स्थानपर ऐसे शब्दोंका अर्थ भी टिप्पणीमें लिख दिया गया है, जो कठिन थे अथवा सर्वसाधारणकी समझमें नहीं आ सकते थे । जो शब्द अथवा वाक्य परिश्रम करने पर भी समझमें नहीं आये हैं, उनके आगे प्रश्नांक '(?)' कर दिये है । पदोंके राग वा ताल जैसे बुधजनविलासमें लिखे हुए थे, वैसेके वैसे लिख दिये है । अनेक पद ऐसे भी हैं, जिनके राग वगैरह नहीं दिये गये, क्योंकि मूल प्रतिमें रागादिके नाम मिले नहीं और संशोधक स्वयं उन्हें लिख नहीं सका ।

इस संग्रहमें पंजावी भाषाके कई एक पद ऐसे छाप दिये गये हैं, जो मूर्ख लेखकोंकी कृपासे रूपान्तरिक हो गये है और पंजावी भाषा नहीं जाननेसे हमारे द्वारा उनका संशोधन ठीक ठीक नहीं हो सका है। आशा है कि, इस विषयमें पाठक हमको क्षमा प्रदान करेंगे।

इस संग्रहकी प्रेसकापी हमारे एक इन्दौरनिवासी मित्रने इन्दौरके जैनमन्दिरकी एक हस्तलिखित प्रतिपरसे करके भेजी है और उसका संशोधन हमने अपने पासकी एक दूसरी प्रतिपरसे किया है। वस इन दो प्रतियोंके सिवाय वुधजनविलासकी और कोई प्रति हमें नहीं मिल सकी।

कविवर वुधजनजीका यथार्थ नाम पं० विरधीचन्दजी था। आप खंडेलवाल थे और जयपुरके रहनेवाले थे। आपके वनाये हुए चार ग्रन्थ प्रसिद्ध है और वे चारों ही छन्दोवद्ध है। १ तत्त्वार्थवोध, २ वुधजनसतसई, ३ पंचास्तिकाय, और ४ वुधजनविलास। ये चारों ग्रन्थ क्रमसे विक्रम संवत, १८७१–८१–९१ और ९२ में वनाये गये हैं। वस आपके विषयमें हमको इससे अधिक परिचय नहीं मिल सका।

वम्वई—चन्दावाड़ी।
श्रावणकृष्णा ८—
श्रीवीर नि० २४३६।

नाथूराम प्रेमी।

पदोंकी वर्णानुक्रमणिका।

पद भजनोंकी पुस्तकें ।

जैनपदसंग्रह प्रथमभाग—कविवर दौलतरामजीकृत ।=)

जैनपदसंग्रह द्वितीयभाग—पं० भागचन्द्रजीकृत ।)

जैनपदसंग्रह तीसराभाग—कवि० भूधरदासजीकृत ।-)

जैनपदसंग्रह चौथाभाग—कवि० द्यानतरायजीकृत ॥=)

माणिकविलास—कविवर माणिकचन्दजीकृत
भजनोका संग्रह .... ।)

जैनभजनसंग्रह—यतिनयनसुखजीकृत.... .... ।=)

वृन्दावनविलास—इसमें कविवर वृन्दावनजीकी और
और कविताओंके सिवाय पदोंका भी संग्रह है ॥।)

हीराचन्द अमोलकके पद—इसमें हिन्दीके ९४ पद
और १४ मराठीके पदोंका संग्रह है .... ।)

मिलनेका पता—

श्रीजैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय—हिराबाग,
पो० गिरगांव—बम्बई.

श्री जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय–बम्बईमें मिलनेवाले

जैनग्रन्थोंका सूचीपत्र।

प्रद्युम्नचरित्र–सरलहिन्दीमें ... . २॥।)
रत्नकरंडश्रावकचार बड़ा–वचनिका पं० सदासुखजीकी ४)
आत्मख्यातिसमयसार–वचनिका सहित .... ४)
भगवतीआराधनासार–वचनिका सहित .... ४)
पुण्यास्रवपुराण–५६ कथाओंका संग्रह . .... ३)
धर्मसंग्रहश्रावकाचार–सरलहिन्दी टीकासहित ... २)
पार्श्वपुराण–पं० भूधरदासजीकृत छन्दोवद्ध ... ... १।)
धर्मपरीक्षा–हिन्दी वचनिका .... १)
वनारसीविलास–वनारसीदासजीके जीवनचरित्रसहित... १॥)
स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा–भाषावचनिका सहित .. १।)
पंचास्तिकायसमयसार–संस्कृत और हिन्दी टीकासहित १॥)
वृहद्द्रव्यसंग्रह– " " " २)
सप्तभंगीतरंगिणी– " " " १)
स्याद्वादमंजरी– " " " ४)
प्रवचनसारपरमागम–कविवर वन्दावनजीकृत .... १।)
चौवीसीपाठ पूजन– " " .... १)
क्षत्रचूडामणिकाव्य–मूल और सरलहिन्दी टीका .... ॥।)

श्रीवीतरागाय नम

पदसंग्रह पंचमभाग।

कविवर बुधजनजीकृत पदोंका संग्रह।

(१)

राग-भैरों (प्रभाती)

प्रात भयो सब भविजन मिलिकै, जिनवर पूजन आवो ॥ प्रात० ॥ टेक ॥ अशुभ मिटावो पुन्य बढ़ावो, नैननि नींद गमावो ॥ प्रा० ॥ १ ॥ तनको धोय धारि उजरे पट, सुभग जलादिक ल्यावो। वीतरागछवि हरखि निरखिकै, आगमोक्त गुन गावो ॥ प्रा० ॥ २ ॥ शास्तर सुनो भनो जिनवानी, तप संजम उपजावो। धरि सरधान देव गुरु आगम, सात तत्त्व रुचि लावो ॥ प्रात० ॥ ३ ॥ दुःखित जनकी दया ल्याय उर, दान चारिविधि द्यावो। राग दोष तजि भजि निज पदको, बुधजन शिवपद पावो ॥ प्रात० ॥ ४ ॥

(२)

राग-भैरों (प्रभाती)

किंकर अरज करत जिन साहिब, मेरी ओर निहारो ॥ किंकर० ॥ टेक ॥ पतितउधारक दीनदयानिधि, सुन्यौ

तोहि उपगारो । मेरे औगुनपै मांत जावो, अपना सुजस विचारो ॥ किं० ॥ १ ॥ अब ज्ञानी दीसत हैं तिनमैं, पक्षपात उरझारो । नाहीं मिलत महाव्रतधारी, कैसैं है निरवारो ॥ किं० ॥ २ ॥ छवी रावरी नैननि निरखी, आगम सुन्यौ तिहारो । जात नहीं भ्रम क्यौं अब मेरो, या दूषनको टारो ॥ किं० ॥ ३ ॥ कोटि बातकी बात कहत हूं, यो ही मतलब म्हारो । जौलौं भव तोलौं बुधजनको, दीज्ये सरन सहारो ॥ किं० ॥ ४ ॥

(३)

राग-षट्ताल तितालो ।

पतितउधारक पतित रटत है, सुनिये अरज हमारी हो ॥ पतित० ॥ टेक ॥ तुमसो देव न आन जगतमैं, जासौं करिये पुकारी हो ॥ प० ॥ १ ॥ साथ अविद्या लगि अनादिकी, रागदोष विस्तारी हो । याहीतैं सन्तति करमनिकी, जनममरनदुखकारी हो ॥ प० ॥ २ ॥ मिलै जगत जन जो भरमावै, कहै हेत संसारी हो। तुम विनकारन शिवमगदायक, निजसुभावदातारी हो ॥ पतित० ॥ ३ ॥ तुम जाने विन काल अनन्ता, गति गतिके भव धारी हो । अब सनमुख बुधजन जांचत है, भवदधि पार उतारी हो ॥ पतित० ॥ ४ ॥

(४)

राग-षट्ताल तिताला ।

और ठौर क्यौं हेरत प्यारा, तेरे हि घटमैं जाननहारा ।

॥ और० ॥ टेक ॥ चलन हलन थल वास एकता, जात्यान्तरतैं न्यारा न्यारा ॥ और० ॥ १ ॥ मोहउदय रागी द्वेषी है, क्रोधादिकका सरजनहारा। भ्रमत फिरत चारौं गति भीतर, जनम मरन भोगत दुख भारा ॥ और० ॥ २ ॥ गुरु उपदेश लखै पद आपा, तबहिं विभाव करै परिहारा। है एकाकी बुधजन निश्चल, पावै शिवपुर सुखद अपारा ॥ और० ॥ ३ ॥

(५)

राग–पट्ताल तितालो।

काल अचानक ही ले जायगा, गाफिल होकर रहना क्या रे ॥ काल० ॥ टेक ॥ छिन हूं तोकूं नाहिं बचावैं, तौ सुभटनका रखना क्या रे ॥ काल० ॥ १ ॥ रंच सवाद करिनके काजैं, नरकनमैं दुख भरना क्या रे। कुलजन पथिकनिके हितकाजैं, जगत जालमैं परना क्या रे ॥ काल० ॥ २ ॥ इंद्रादिक कोउ नाहिं बचैया, और लोकका शरना[1] क्या रे। निश्चय हुआ जगतमैं मरना, कष्ट परैं तब डरना क्या रे ॥ काल० ॥ ३ ॥ अपना ध्यान करत खिर जावैं, तौ करमनिका हरना क्या रे। अब हित करि आरत तजि बुधजन, जन्म जन्ममैं जरना क्या रे ॥ ॥ काल० ॥ ४ ॥

(६)

म्हे तो थांपर वारी, वारी वीतरागीजी, शांत छवी थांकी आनंदकारी जी ॥ म्हे० ॥ टेक ॥ इंद्र नरिंद्र फनिंद मिलि

---

१ अन्य लोगोंका।

सेवत, मुनि सेवत रिधिधारी जी ॥ म्हे० ॥ १ ॥ लखि अविकारी परउपगारी, लोकालोकनिहारी जी ॥ म्हे० ॥ २ ॥ सब त्यागी जी कृपातिहारी, बुधजन ले बलिहारी जी ॥ म्हे० ॥ ३ ॥

(७)

राग–रामकली, जलद तितालो।

या नित चितवो उठिकै भोर, मैं हूं कौन कहांतैं आयो, कौन हमारी ठौर ॥ या नित० ॥ टेक ॥ दीसत कौन कौन यह चितवत, कौन करत है शोर[1]। ईश्वर कौन कौन है सेवक, कौन करै झकझोर ॥ या नित० ॥ १ ॥ उपजत कौन मरै को भाई, कौन डरै लखि घोर। गया नहीं आवत कछु नाहीं, परिपूरन सब ओर ॥ या नित० ॥ २ ॥ और औरमैं और रूप है, परनति करि लइ और। स्वांग धरैं डोलौ याहीतैं, तेरी बुधजन भोरं[2] ॥ या नित० ॥ ३ ॥

(८)

श्रीजिनपूजनको हम आये, पूजत ही दुखदुंद मिटाये ॥ श्रीजिन० ॥ टेक ॥ विकलप गयो प्रगट भयो धीरज, अदभुत सुख समता बरसाये। आधि व्याधि अब दीखत नाहीं, धरम कलपतरु आँगन थाये ॥ श्रीजिन० ॥ १ ॥ इतमैं इन्द्र चक्रवति इतमैं, इतमैं फनिंद खरे सिर नाये। मुनिजनवृन्द करैं थुति हरषत, धनि हम जनमैं पद परसाये ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥ परमौदारिकमैं परमातम,

---

१ शब्द। २ भोलापन–मूर्खत्व।

ज्ञानमई हमको दरसाये। ऐसे ही हममैं हम जानैं, बुधजन गुन मुख जात न गाये ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

(९)

राग—ललित एकतालो।

वधाई राजै हो आज राजै, वधाई राजै, नाभिरायके द्वार। इंद्र सची सुर सब मिलि आये, सजि ल्याये गजराजै ॥ वधाई० ॥ १ ॥ जन्मसदनतैं सची ऋषभ ले, सोपि दये सुरराजै। गजपै धारि गये सुरगरिपै, न्हौंन करनके काजै ॥ वधाई० ॥ २ ॥ आठ सहस सिर कलस जु ढारे, पुनि सिंगार समाजै। ल्याय धर्यौ मरुदेवी करमैं, हरि नाच्यौ सुख साजै ॥ वधाई० ॥ ३ ॥ लच्छन व्यंजन सहित सुभग तन, कंचनदुति रवि लाजै। या छवि बुधजनके उर निशि दिन, तीनज्ञानजुत राजै ॥ वधाई० ॥ ४ ॥

(१०)

राग—ललित जलद तितालो।

हो जिनवानी जू, तुम मोकौं तारोगी ॥ हो० ॥ टेक ॥ आदि अन्त अविरुद्ध वचनतैं, संशय भ्रम निरवारोगी ॥ हो० ॥ १ ॥ ज्यौं प्रतिपालत गाय वत्सकौं, त्यौं ही मुझकौं पारोगी। सनमुख काल बाघ जब आवै, तब तत्काल उबारोगी ॥ हो० ॥ २ ॥ बुधजन दास वीनवै माता, या विनती उर धारोगी। उलझि रह्यौ हूं मोह-जालमैं, ताकौं तुम सुरझारोगी ॥ हो० ॥ ३ ॥

(११)

राग—विलावल कनड़ी।

मनकैं हरष अपार—चितकैं हरष अपार, वानी सुनि

॥ टेक ॥ ज्यौं तिरषातुर अम्रत पीवत, चातक अंबुद[1] धार ॥ वानी सुनि० ॥ १ ॥ मिथ्या तिमिर गयो ततखिन ही, संशयभरम निवार । तत्त्वारथ अपने उर दरस्यौ, जानि लियो निज सार ॥ वानी सुनि० ॥ २ ॥ इंद नरिंद फनिंद पेंदीधर[2], दीसत रंक लगार । ऐसा आनँद बुधजनके उर, उपज्यौ अपरंपार ॥ वानी सुनि० ॥ ३ ॥

(१२)

राग—अलहिया ।

चन्दजिनेसुर नाथ हमारा, महासेनसुत लगत पियारा ॥ चन्द० ॥ टेक ॥ सुरपति नरपति फनिपति सेवत, मानि महा उत्तम उपगारा । मुनिजन ध्यान धरत उरमाहीं, चिदानंद पदवीका धारा ॥ चन्द० ॥ १ ॥ चरन शरन बुधजन जे आये, तिन पाया अपना पद सारा । मंगलकारी भवदुखहारी, स्वामी अद्भुतउपमावारा ॥ चन्द० ॥ २ ॥

(१३)

राग—अलहिया विलावल—ताल धीमा तेताला ।

करम देत दुख जोर, हो साइँयां ॥ करम० ॥ टेक ॥ कैइ परावृत पूरन कीनैं, संग न छांड़त मोर, हो साइँयां ॥ करम० ॥ १ ॥ इनके वशतैं मोहि बचावो, महिमा सुनी अति तोर, हो साइँयां ॥ करम० ॥ २ ॥ बुधजनकी विनती तुमहीसौं, तुमसा प्रभु नहिं और, हो साइँयां ॥ करम० ॥ ३ ॥

---

१ मेघ । २ पदवीधर ।

(१४)

राग-विलावल धीमो तेतालो।

नरभव पाय फेरि दुख भरना, ऐसा काज न करना हो ॥ नरभव० ॥ टेक ॥ नाहक ममत ठानि पुद्गलसौं, करम-जाल क्यों परना हो ॥ नरभव० ॥ १ ॥ यह तो जड़ तू ज्ञान अरूपी, तिल तुप ज्यों गुरु वरना हो। राग दोष तजि भजि समताकौं, कर्म साथके हरना हो ॥ नरभव० ॥ २ ॥ यो भव पाय विषय-सुख सेना, गज चढ़ि ईंधन ढोना हो। बुधजन समुझि सेय जिनवर पद, ज्यों भव-सागर तरना हो ॥ नरभव० ॥ ३ ॥

(१५)

राग-विलावल इकतालो।

सारद ! तुम परसादतें, आनँद उर आया ॥ सारद० ॥ टेक ॥ ज्यों तिरसातुर जीवकों, अम्रतजल पाया ॥ सारद० ॥ १ ॥ नय परमान निखेपतें, तत्त्वार्थ बताया। भाजी भूलि मिथ्यातकी, निज निधि दरसाया ॥ ॥ सारद० ॥ २ ॥ विधिना मोहि अनादितें, चहुँगति भरमाया। ता हरिनेकी विधि सबै, मुझमाहिं बताया ॥ सारद० ॥ ३ ॥ गुन अनन्त मति अलपतैं, मोपै जात न गाया। प्रचुर कृपा लखि रावरी, बुधजन हरपाया ॥ सारद० ॥ ४ ॥

(१६)

गुरु दयाल तेरा दुख लखिकैं, सुन लै जो फुरमावै है ॥ गुरु० ॥ तोमैं तेरा जतन बतावै, लोभ कछू नहिं

चावै है ॥ गुरु० ॥ १ ॥ पर सुभावको मोस्था चाहै, अपना उसा वनावै है । सो तो कवहूं हुवा न होसी, नाहक रोग लगावै है ॥ गुरु० ॥ २ ॥ खोटी खरी जस करी कुमाई, तैसी तेरै आवै है । चिन्ता आगि उठाय हियामैं, नाहक जान जलावै है ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ पर अपनावै सो दुख पावै, बुधजन ऐसे गावै है । परको त्यागि आप थिर तिष्टै, सो अविचल सुख पावै है ॥ गुरु० ॥ ४ ॥

(१७)

राग-आसावरी ।

अरज ह्मारी मानो जी, याही ह्मारी मानो, भवदधि हो तारना ह्मारा जी ॥ अरज० ॥ टेक ॥ पतितउधारक पतित पुकारै, अपनो विरद पिछानो ॥ अरज० ॥ १ ॥ मोह मगर मछ दुख दावानल, जनममरन जल जानो । गति गति भ्रमन भँवरमैं डूवंत, हाथ पकरि ऊंचो आनो ॥ अरज० ॥ २ ॥ जगमैं आन देव वहु हेरे, मेरा दुख नहिं भानो । बुधजनकी करुना ल्यो साहिव, दीजे अविचल थानो ॥ अरज० ॥ ३ ॥

(१८)

राग-आसावरी जोगिया ताल धीमो तेतालो ।

तू कांईं चालै लाग्यो रे लोभीड़ा, आयो छै बुढ़ापो ॥ तू० ॥ टेक ॥ धंधामाहीं अंधा ह्वै कैं, क्यौं खोवै छै आपो रे ॥ तू० ॥ १ ॥ हिमत घटी थारी सुमत मिटी छै, भाजि गयो तरुणापो । जम ले जासी सव रह जासी, सँग जासी

---

१ सरीसा ।

पुन्य[1] पापो रे ॥ तू० २ ॥ जग स्वारथकौ कोइ न तेरो, यह निहचै उर थापो । बुधजन ममत मिटावौ मनतैं, करि मुख श्रीजिनजापो रे ॥ तू० ॥ ३ ॥

(१९)

राग–आसावरी जोगिया ताल धीमो तेतालो ।

थे ही मोनैं तारो जी, प्रभुजी कोई न हमारो ॥ थे ही० ॥ टेक ॥ हूं एकाकि अनादि कालतै, दुख पावत हूं भारो जी ॥ थे ही० ॥ १ ॥ बिन मतलबके तुम ही स्वामी, मतलबकौ संसारो । जग जन मिलि मोहि जगमैं राखै, तू ही काढ़नहारो ॥ थे ही० ॥ २ ॥ बुधजनके अपराध मिटावो, शरन गह्यो छै थारो । भवदधिमाहीं डूबत मोकौ, कर गहि आप निकारो ॥ थे ही० ॥ ३ ॥

(२०)

राग–आसावरी मांझ, ताल धीमो एकतालो ।

प्रभू जी अरज ह्मारी उर धरो ॥ प्रभू जी० ॥ टेक॥ प्रभू जी नरक निगोधांमैं रुल्यौ, पायौ दुःख अपार ॥ प्रभू जी० ॥१॥ प्रभू जी, हूं पशुगतिमैं ऊपज्यौ, पीठ सह्यौ अतिभार ॥ प्रभू जी० ॥ २ ॥ प्रभू जी, विषय मगनमैं सुर भयो, जात न जान्यौ काल ॥ प्रभू जी० ॥ ३ ॥ प्रभू जी, नरभव कुल श्रावक लह्यौ, आयो तुम दरबार ॥ प्रभू जी० ॥ ४ ॥ प्रभू जी, भव भरमन बुधजनतनों, मेटौ करि उपगार ॥ प्रभू जी० ॥ ५ ॥

---

१ पुण्य–शुभ कर्म ।

(२१)

राग–आसावरी ।

जगतमैं होनहार सो होवै, सुर नृप नाहिं मिटावै ॥ जगत० ॥ टेक ॥ आदिनाथसेकौं भोजनमैं, अन्तराय उपजावै । पारसप्रभुकौं ध्यानलीन लखि, कमठ मेघ वरसावै ॥ जगत० ॥ १ ॥ लखमणसे सँग भ्राता जाकै, सीता राम गमावै । प्रतिनारायण रावणसेकी, हनुमत लंक जरावै ॥ जगत० ॥ २ ॥ जैसो कमावै तैसो ही पावै, यौं बुधजन समझावै। आप आपकौं आप कमावौ, क्यौं परद्रव्य कमावै ॥ जगत० ॥ ३ ॥

(२२)

राग–आसावरी जलदतेतालो ।

आगैं कहा करसी भैया, आजासी जव काल रे ॥ आगैं० ॥ टेक ॥ ह्यां तौ तैंनैं पोल मचाई, व्हां तौ होय समाल रे ॥ आगैं० ॥ १ ॥ झूठ कपट करि जीव सताये, हर्या पराया माल रे । सम्पतिसेती धाप्या[1] नाहीं, तकी विरानी[2] वाल[3] रे ॥ आगैं० ॥ २ ॥ सदा भोगमैं मगन रह्या तू, लख्या नहीं निज हाल रे । सुमरन दान किया नहिं भाई, हो जासी पैमाल[4] रे ॥ आगैं० ॥ ३ ॥ जोवनमैं जुवती सँग भूल्या, भूल्या जव था वाल रे । अव हू धारो बुधजन समता, सदा रहहु खुशहाल रे ॥ आगैं० ॥ ४ ॥

(२३)

राग–आसावरी जोगिया जलद तेतालो ।

चेतन, खेल सुमतिसँग होरी ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ तोरि

---

१ सतुष्ट नहीं हुआ । २ दूसरेकी । ३ स्त्री । ४ पायमाल–नष्ट ।

आनकी प्रीति सयाने, भली बनी या जोरी ॥ चेतन० ॥ १ ॥ डगर डगर डोलै है यौं ही, आव आपनी पौरी[1] निज रस फगुवा क्यों नहिं बांटो, नातर ख्वारी तोरी ॥ चेतन० ॥ २ ॥ छार[2] कषाय त्यागि या गहि लै, समकित केसर घोरी। मिथ्या पाथर डारि धारि लै, निज गुलालकी झोरी ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ खोटे भेष धरैं डोलत है, दुख पावै बुधि भोरी। बुधजन अपना भेष सुधारो, ज्यौं विलसो शिवगोरी ॥ चेतन० ॥ ४ ॥

(२४)

राग—आसावरी जोगिया जल्द तेतालो।

हे आतमा! देखी दुति तोरी रे॥ हे आतमा० ॥ टेक ॥ निजको ज्ञात लोकको ज्ञाता, शक्ति नहीं थोरी रे ॥ हे आतमा० ॥ १ ॥ जैसी जोति सिद्ध जिनवरमैं, तैसी ही मोरी रे ॥ हे आतमा० ॥ २ ॥ जड़ नहिं हुवो फिरै जड़के वसि, कै जड़की जोरी रे ॥ हे आतमा० ॥ ३ ॥ जगके काजि करन जग टहलै, बुधजन मति भोरी रे ॥ हे आतमा० ॥ ४ ॥

(२५)

बाबा! मैं न काहू का, कोई नहीं मेरा रे ॥ बाबा० ॥टेक॥ सुर नर नारक तिरयक गतिमैं, मोकों करमन घेरा रे ॥ बाबा० ॥ १ ॥ मात पिता सुत तिय कुल परिजन, मोह गहल उरझेरा रे। तन धन वसन भवन जड़ न्यारे, हूं चि-

---

१ पौर—घर। २ धूल।

न्मूरति न्यारा रे ॥ वावा० ॥ २ ॥ मुझ विभाव जड़ कर्म रचत हैं, करमन हमको फेरा रे । विभाव चक्र तजि धारि सुभावा, अव आनँदघन हेरा रे ॥ वावा० ॥ ३ ॥ खरच (?) खेद नहिं अनुभव करते, निरखि चिदानँद तेरा रे । जप तप व्रत श्रुत सार यही है, वुधजन कर न अवेरा रे ॥ वावा० ॥ ४ ॥

(२६)

और सवै मिलि होरि रचावैं, हूं काके सँग खेलौंगी होरी ॥ और० ॥ टेक ॥ कुमति हरामिनि ज्ञानी पियापै, लोभ मोहकी डारी ठगौरी । भोरै झूठ मिठाई खवाई, खोंसि[1] लये गुन करि वरजोरी[2] ॥ और० ॥ १ ॥ आप हि तीनलोकके साहिव, कौन करै इनकै सम जोरी । अपनी सुधि कवहूँ नहिं लेते, दास भये डोलैं पर पौरी ॥ और० ॥ २ ॥ गुरु वुधजनतैं सुमति कहत है, सुनिये अरज दयाल सु मोरी । हा हा करत हूं पॉय परत हूं, चेतन पिय कीजे मो ओरी ॥ और० ॥ ३ ॥

(२७)

धर्म विन कोई नहीं अपना, सव संपति धन थिर नहिं जगमैं, जिसा रैनसपना ॥ धर्म० ॥ टेक ॥ आगैं किया सो पाया भाई, याही है निरना । अव जो करैगा सो पावैगा, तातैं धर्म करना ॥ धर्म० ॥ १ ॥ ऐसैं सव संसार कहत है, धर्म कियैं तिरना । परपीड़ा विसनादिक

१ छीन लिये । २ जवरदस्ती ।

सेयें, नरकविषै परना ॥ धर्म० ॥ २ ॥ नृपके घर सारी सामग्री, ताकैं ज्वर तपना । अरु दारिद्रीकै हू ज्वर है, पाप उदय थपना ॥ धर्म ॥० ३ ॥ नाती तो स्वारथके साथी, तोहि विपत भरना । वन गिरि सरिता अगनि जुद्धमैं, धर्महिका सरना ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ चित बुधजन सन्तोष धारना, पर चिन्ता हरना । विपति पड़ै तो समता रखना, परमातम जपना ॥ धर्म० ॥ ५ ॥

(२८)

राग–टोडी ताल होलीकी ।

कंचन दुति व्यंजन लच्छन जुत, धनुष पांचसै ऊंची काया ॥ कंचन० ॥ टेक ॥ नाभिराय मरुदेवीके सुत, पदमासन जिन ध्यान लगाया ॥ कंचन० ॥ १ ॥ ये तिन सुत व्योहार कथनमैं, निश्चय एक चिदानँद गाया । अपरस अवरन अरस अगंधित, बुधजन जानि सु सीस नवाया ॥ कंचन० ॥ २ ॥

(२९)

धनि सरधानी जगमैं, ज्यौं जल कमल निवास ॥ धनि० ॥ टेक ॥ मिथ्या तिमिर फट्यो प्रगट्यो शशि, चिदानंद परकास ॥ धनि० ॥ १ ॥ पूरव कर्म उदय सुख पावैं, भोगत ताहि उदास । जो दुखमैं न विलाप करै, निरवैर सहे तन त्रास ॥ धनि० ॥ २ ॥ उदय मोहचारित परवशि है, व्रत नहिं करत प्रकास । जो किरिया करि हैं निरवांछक, करैं नहीं फल आस ॥ धनि० ॥ ३ ॥ दोषरहित प्रभु

धर्म दयाजुत, परिग्रह विन गुरु तास। तत्त्वारथरुचि है जाके घट, बुधजन तिनका दास ॥ धनि० ॥ ४ ॥

(३०)

राग–सारंग।

वधाई भई हो, तुम निरखत जिनराय, वधाई भई हो ॥ टेक ॥ पातक गये भये सव मंगल, भैंटत चरनकमल जिनराई ॥ वधाई० ॥ १ ॥ मिटे मिथ्यात भरमके वादर, प्रगटत आतम रवि अरुनाई। दुरवुध चोर भजे जिय जागे, करन लगे जिनधर्म कमाई ॥ वधाई० ॥ २ ॥ दृग-सरोज फूले दरसनतैं, तुम करुना कीनी सुखदाई। भापि अनुव्रत महाविरतको, बुधजनको शिवराह वताई ॥ वधाई० ॥ ३ ॥

(३१)

राग–सारंगकी मांझ ताल दीपचन्दी।

म्हांरी सुणिज्यो परम दयालु, तुमसौं अरज करूं म्हांरी० ॥ टेक ॥ आन उपाव नहीं या जगमैं, जग तारक जिनराज, तेरे पाय परूं ॥ म्हांरी० ॥ १ ॥ साथ अनादि लागि विधि मेरी, करत रहत वेहाल, इनकौं कौलौं भरूं ॥ म्हांरी० ॥ २ ॥ करि करुना करमनको काटो, जनम मरन दुखदाय, इनतैं वहुत डरूं ॥ म्हांरी० ॥ ३ ॥ चरन सरन तुम पाय अनूपम, बुधजन मांगत येह–गति गति नाहिं फिरूं ॥ म्हांरी० ॥ ४ ॥

(३२)

वधाई चन्दपुरीमैं आज ॥ वधाई० ॥ टेक ॥ महासे

सुत-चंद्रकुँवरजू, राज लह्यौ सुख साज ॥ वधाई० ॥ १ ॥ सनमुख नृत्यकारिनी नाचत, होत मृदंग अवाज । भैंट करत नृप देश देशके, पूरत सवके काज ॥ वधाई० ॥ २ ॥ सिंहासनपै सोहत ऐसो, ज्यौं शशि नखैत समाज । नीति निपुन परजाँको पालक, वुधजनको सिरताज ॥ वधाई० ॥ ३ ॥

(३३)

राग–लूहरि सारंग ।

अरज करूं (तसलीम करूं) ठाड़ो विनऊं चरननको चेरो ॥ अरज० ॥ टेक ॥ दीनानाथ दयाल गुसाईं, मोपर करुना करिकैं हेरो ॥ अरज० ॥ १ ॥ भव वनमैं निरवल मोहि लखिकैं, दुष्टकर्म सव मिलिकैं घेरो । नाना रूप वनाकै मेरो, गति चारोंमैं दयो है फेरो ॥ अरज० ॥ २ ॥ दुखी अनादि कालको भटकत, सरनो आय गह्यौ मैं तेरो । कृपा करो तौ अव वुधजनपै, हरो वेगि संसार वसेरो ॥ अरज० ॥ ३ ॥

(३४)

तथा—

निजपुरमैं आज मची होरी ॥ निज० ॥ टेक ॥ उमँगि चिदानँदजी इत आये, इत आई सुमती गोरी ॥ निज० ॥ १ ॥ लोकलाज कुलकाँनि गमाई, ज्ञान गुलाल [illegible]ी झोरी ॥ निज० ॥ २ ॥ समकित केसर रंग वनायो, [illegible]रितकी पिचुकी छोरी ॥ निज० ॥ ३ ॥ गावत अजपा

---

१ नक्षत्र तारागण । २ प्रजा । ३ कुलकी लाज ।

गान मनोहर, अनहद झरसौं वरस्यो री ॥ निज० ॥ ४ ॥ देखन आये बुधजन भीगे, निरख्यौ ख्याल अनोखो री ॥ निज० ॥ ५ ॥

(२५)

राग—लहरि सारंग जलद तेतालो।

मोकौं तारो जी तारो जी किरपा करिकै ॥ मोकौं० ॥ टेक ॥ अनादि कालको दुखी रहत हूं, टेरत हूं जमतैं डरिकै ॥ मोकौं० १ ॥ भ्रमत फिरत चारौं गति भीतर, भवमाहीं मरि मरि करिकै। डूबत अगम अथाह जलधिमैं, राखो हाथि पकरि करिकै ॥ मोकौं० ॥ २ ॥ मोह भरम विपरीत वसत उर, आप न जानों निज करिकै। तुम सब ज्ञायक मोहि उवारो, बुधजनको अपनो करिकै ॥ मोकौं० ॥ ३ ॥

(२६)

राग—सारंग।

हम शरन गह्यौ जिन चरनको ॥ हम० ॥ टेक ॥ अब औरनकी मान न मेरे, डर हु रह्यो नहिं मरनको ॥ हम० ॥ १ ॥ भरम विनाशन तत्त्वप्रकाशन, भवदधि तारन तरनको। सुरपति नरपति ध्यान धरत वर, करि निश्चय दुख हरनको ॥ हम० ॥ २ ॥ या प्रसाद ज्ञायक निज मान्यौ, जान्यौ तन जड़ परनको। निश्चय सिधसो[1] पै कषायतैं, पात्र भयो दुख भरनको ॥ हम० ॥ ३ ॥ प्रभु विन और नहीं या जगमैं, मेरे हितके करनको। बुधजनकी अरदास यही है, हर संकट भव फिरनको ॥ हम० ॥ ४ ॥

---

१ सिद्ध भगवान सरीखा।

(३७).

राग—सारंग ।

तन देख्या अथिर घिनावना ॥ तन० ॥ टेक ॥ वाहर चाम चमक दिखलावै, माहीं मैल अपावना । वालक ज्वान बुढ़ापा मरना, रोगशोक उपजावना ॥ तन० ॥ १ ॥ अलख अमूरति नित्य निरंजन, एकरूप निज जानना । वरन फरस रस गंध न जाकै, पुन्य पाप विन मानना ॥ तन० ॥ २ ॥ करि विवेक उर धारि परीक्षा, भेद—विज्ञान विचारना । बुधजन तनतैं ममत मेटना, चिदानंद पद धारना ॥ तन० ॥ ३ ॥

(३८)

राग—सारंग लूहरि ।

तेरो करि लै काज वखत फिर ना ॥ तेरो० ॥ टेक ॥ नरभव तेरे वश चालत है, फिर परभव परवश परना ॥ तेरो० ॥ १ ॥ आन अचानक कंठ दवैंगे, तव तोकौं नाहीं शरना । यातैं विलम न ल्याय वावरे, अव ही कर जो है करना ॥ तेरो० ॥२॥ सव जीवनकी दया धार उर, दान सुपात्रनि—कर धरना । जिनवर पूजि शास्त्र सुनि नित प्रति, बुधजन संवर आचरना ॥ तेरो० ॥ ३ ॥

(३९)

राग—लूहरि मीणांकी चालमें ।

अहो ! देखो केवलज्ञानी, ज्ञानी छवि भली या विराजै हो—भली या विराजै हो ॥ अहो० ॥ टेक ॥ सुर नर मुनि याकी सेव करत हैं, करम हरनके काजै हो ॥ अहो०

॥ १ ॥ परिग्रहरहित प्रातिहारजजुत, जगनायकता छाजै हो। दोष विना गुन सकल सुधारस, दिविधुनि मुखतैं गाजै हो ॥ अहो देखो० ॥ २ ॥ चितमैं चितवत ही छिनमाहीं, जन्म जन्म अघ भाजै हो। बुधजन याकौं कबहुं न विसरो, अपने हितके काजै हो ॥ अहो० ॥ ३ ॥

(४०)

राग—सारंग लूहरि।

श्रीजी तारनहारा थे तो, मोनैं प्यारा लागो राज ॥ श्री० ॥ टेक ॥ वार सभा विच गंधकुटीमैं, राज रहे महाराज ॥ श्री० ॥ १ ॥ अनत कालका भरम मिटत है, सुनतहिं आप अवाज ॥ श्री० ॥ २ ॥ बुधजन दास रावरो विनवै, थासूं सुधरै काज ॥ श्री० ॥ ३ ॥

(४१)

राग—पूरवी एकताला।

तनकें मवासी हो, अयाना ॥ तनके० ॥ टेक ॥ चहुँगति फिरत अनंतकालतैं, अपने सदनकी सुधि भौराना ॥ तनके० ॥ १ ॥ तन जड़ फरस—गंध—रसरूपी, तू तौ दरसनज्ञाननिधाना, तनसौं ममत मिथ्यात मेटिकै, बुधजन अपने शिवपुर जाना ॥ तनके० ॥ २ ॥

(४२)

राग—पूरवी एकतालो।

नैन शान्त छवि देखि छके दोऊ ॥ नैन० ॥ टेक ॥ अब अद्भुत दुति नाहिं विसराऊं, बुरा भला जग कोटि कहो कोऊ ॥ नैन० ॥ १ ॥ वड़भागन यह अवसर पाया, सुनियो जी

अब अरज मेरी कहूं। भवभवमें तुमरे चरननको, बुधजन दास सदा हि बन्यो रहूं ॥ नैन० ॥ २ ॥

(४३)

राग-पूरवी जल्द तितालो।

हरना जी जिनराज, मोरी पीर ॥ हरना०॥ टेक॥ आन देव सेये जगवासी, सरयौं नहीं मेरो काज ॥ हरना० ॥ १ ॥ जगमें बसत अनेक सहज ही, प्रनवत विविध समाज। तिनपै इष्ट अनिष्ट कल्पना, मैटोगे महाराज ॥ हरना० ॥ २ ॥ पुद्गल राचि अपनपौ भूल्यौ, विरथा करत इलाज। अबहिं जथाविधि वेगि बतावो, बुधजनके सिरताज ॥ हरना०॥३॥

(४४)

राग-पूरवी।

भजन विन यों ही जनम गमायो ॥ भजन० ॥ टेक ॥ पानी पैल्यां[1] पाल न बांधी, फिर पीछें पछतायो ॥ भज० ॥ १ ॥ रामा-मोह भये दिन खोवत, आगापाग[2] बँधायो। जप तप संजम दान न दीनौं, मानुष जनम हरायो ॥ भजन० ॥ २ ॥ देह सीस जब कापन लागी, दसन चलाचल थायो। लागी आगि भुजावन कारन, चाहत कूप खुदायो ॥ भजन० ॥ ३ ॥ काल अनादि गुमायो भ्रमतां, कबहुँ न थिर चित ल्यायो। हरी विषयसुखभरम भुलानो, मृगतिसना-वश धायो ॥ भजन० ॥ ४ ॥

(४५)

राग-पूरवी।

तारो क्यों न, तारो जी, म्हे तो थांके शरना आया ॥

---

१ पहले, पूर्वमें। २ [illegible] खेतके चारों ओर जो बँधिया बाधते हैं।

टेक ॥ विधना मोकौं चहुँगति फेरत, बड़े भाग तुम दरशन पाया ॥ तारो० ॥ १ ॥ मिथ्यामत जल मोह मकरजुत, भरम भौंरमैं गोता खाया। तुम मुख वचन अलंवन पाया, अब बुधजन उरमैं हरषाया ॥ तारो० ॥ २ ॥

(४६)

भवदधि-तारक नवका, जगमाहीं जिनवान ॥ भव० ॥ टेक ॥ नय प्रमान पतवारी जाके, खेवट आतमध्यान ॥ भव० ॥ १ ॥ मन वच तन सुध जे भवि धारत, ते पहुँचत शिवथान। परत अथाह मिथ्यात भँवर ते, जे नहिं गहत अजान ॥ भव० ॥ २ ॥ विन अक्षर जिनमुखतैं निकसी, परी वरनजुत कान। हितदायक बुधजनकों गनधर, गूँथे ग्रंथ महान ॥ भव० ॥ ३ ॥

(४७)

राग–धनासरी धीमो तितालो।

प्रभु, थांसूं अरज हमारी हो ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ मेरे हितू न कोऊ जगतमैं, तुम ही हो हितकारी हो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ संग लग्यौ मोहि नेकू न छांड़ै, देत मोह दुख भारी। भववनमांहिं नचावत मोकौं, तुम जानत हौ सारी ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ थांकी महिमा अगम अगोचर, कहि न सकै बुधि म्हारी। हाथ जोरकै पाय परत हूं, आवागमन निवारी हो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

(४८)

तथा—

याद प्यारी हो, म्हांनैं थांकी याद प्यारी ॥ हो म्हांनैं० टेक ॥ मात तात अपने स्वारथके, तुम हित परउप-

गारी ॥ हो म्हांनैं० ॥ १ ॥ नगन छबी सुन्दरता जापै, कोटि काम दुति वारी । जन्म जन्म अवलोकौं निशिदिन, बुधजन जा बलिहारी ॥ हो म्हांनैं० ॥ २ ॥

(४९)

राग–गौड़ी ताल आदि तितालो ।

अरे हाँ रे तैं तो सुधरी बहुत बिगारी ॥ अरे० ॥ टेक ॥ ये गति मुक्ति महलकी पौरी, पाय रहत क्यौं पिछारी ॥ अरे० ॥ १ ॥ परकौं जानि मानि अपनो पद, तजि ममता दुखकारी । श्रावक कुल भवदधि तट आयो, बूड़त क्यौं रे अनारी ॥ अरे० ॥ २ ॥ अबहूं चेत गयो कछु नाहीं, राखि आपनी वारी । शक्तिसमान त्याग तप करिये, तब बुधजन सिरदारी ॥ अरे० ॥ ३ ॥

(५०)

राग–काफी कनड़ी ।

मैं देखा आतमरामा ॥ मैं० ॥ टेक ॥ रूप फरस रस गंधतैं न्यारा, दरस-ज्ञान-गुनधामा । नित्य निरंजन जाकै नाहीं, क्रोध लोभ मद कामा ॥ मैं० ॥ १ ॥ भूख प्यास सुख दुख नहिं जाकै, नाहीं वन पुर गामा । नहिं साहिब नहिं चाकर भाई, नहीं तात नहिं मामा ॥ मैं० ॥ २ ॥ भूलि अनादिथकी जग भटकत, लै पुद्गलका जामा । बुधजन संगति जिनगुरुकीतैं, मैं पाया मुझ ठामा ॥ मैं० ॥ ३ ॥

(५१)

राग–काफी कनड़ी–ताल–पसतो ।

अब अघ करत लजाय रे भाई ॥ अब० ॥ टेक ॥ श्रावक घर उत्तम कुल आयो. भैंटे श्रीजिनराय ॥ अब०

॥ १ ॥ धन वनिता आभूषन परिगह, त्याग करौ दुख-दाय। जो अपना तू तजि न सकै पर,-सेयां नरक न जाय ॥ अब० ॥ २ ॥ विषयकाज क्यौं जनम गुमावै, नरभव कब मिलि जाय। हस्ती चढ़ि जो ईंधन ढोवै, बुधजन कौन वसाय ॥ अब० ॥ ३ ॥

(५२)

राग–काफी कनड़ी।

तोकौं सुख नहिं होगा लोभीड़ा ! क्यौं भूल्या रे पर-भावनमैं ॥ तोकौं० ॥ टेक ॥ किसी भाँति कहुँका धन आवै, डोलत है इन दावनमैं ॥ तोकौं० ॥ १ ॥ व्याह करूं सुत जस जग गावै, लग्यौ रहै या भावनमैं ॥ तोकौं० ॥ २ ॥ दरव परिनमत अपनी गौंतैं, तू क्यौं रहित उपा-यनमैं ॥ तोकौं० ॥ ३ ॥ सुख तो है सन्तोष करनमैं, नाहीं चाह वढावनमैं ॥ तोकौं० ॥ ४ ॥ कै सुख है बुधजनकी संगति, कै सुख शिवपद पावनमैं ॥ तोकौं० ॥ ५ ॥

(५३)

राग–कनड़ी।

निरखे नाभिकुमारजी, मेरे नैन सफल भये ॥ निर० ॥ टेक ॥ नये नये वर मंगल आये, पाई निज रिधि सार ॥ निरखे० ॥१॥ रूप निहारन कारन हरिने, कीनी आंख हजार। वैरागी मुनिवर हू लखिकै, ल्यावत हरष अपार ॥ निरखे० ॥ २ ॥ भरम गयो तत्त्वारथ पायो, आवत ही दरबार। बुधजन चरन शरन गहि जाँचत, नहिं जाऊं ॥ निरखे० ॥ ३ ॥

(५४)

राग-कनड़ी।

भला होगा तेरो यौं ही, जिनगुन पल न भुलाय हो ॥ भला० ॥ टेक ॥ दुख मेटन सुखदेन सदा ही, नमिके मन वच काय हो ॥ भला० ॥१॥ शक्री चक्री इन्द्र फनिन्द्र सु, वरनन करत थकाय हो। केवलज्ञानी त्रिभुवनस्वामी, ताकौं निशिदिन ध्याय हो ॥ भला० ॥ २ ॥ आवागमन सुरहित निरंजन, परमातम जिनराय हो। बुधजन विधितैं पूजि चरन जिन, भव भवमैं सुखदाय हो ॥ भला० ॥ ३ ॥

(५५)

राग-कनड़ी।

उत्तम नरभव पायकैं, मति भूलै रे रामा ॥ मति भू० ॥ टेक ॥ कीट पशूका तन जब पाया, तब तू रह्या निकामा। अब नरदेही पाय सयाने, क्यौं न भजै प्रभुनामा ॥ मति भू० ॥ १ ॥ सुरपति याकी चाह करत उर, कब पाऊं नरजामा। ऐसा रतन पायकैं भाई, क्यौं खोवत विन कामा ॥ मति भू० ॥ २ ॥ धन जोबन तन सुन्दर पाया, मगन भया लखि भामा। काल अचानक झटक खायगा, परे रहैंगे ठामा ॥ मति० ॥ ३ ॥ अपने स्वामीके पद-पंकज, करो हिये विसरामा। मेटि कपट भ्रम अपना बुधजन, ज्यौं पावौ शिवधामा ॥ मति भू० ॥ ४ ॥

(५६)

धनि चन्दप्रभदेव, ऐसी सुबुधि उपाई ॥ धनि० ॥ टेक ॥ जगमें कठिन विराग दशा है, सो दरपन लखि तुरत

उपाई ॥ धनि० ॥ १ ॥ लौकान्तिक आये ततखिन ही, चढ़ि सिविका वनओर चलाई। भये नगन सब परिग्रह तजिकै, नग चम्पातर लौंच लगाई ॥ धनि० ॥ २ ॥ महासेन धनि धनि लच्छमना, जिनकैं तुमसे सुत भये साईं। बुधजन वन्दत पाप निकन्दत, ऐसी सुवुधि करो मुझमाई ॥ धनि० ॥ ३ ॥

(५७)

चुप रे मूढ अजान, हमसौं क्या वतलावै ॥ चुप० ॥ टेक ॥ ऐसा कारज कीया तैंनैं, जासौं तेरी हान ॥ चु० ॥ १ ॥ राम विना हैं मानुष जेते, भ्रात तात सम मान। कर्कश वचन वकै मति भाई, फूटत मेरे कान ॥ चुप० ॥ २ ॥ पूरव दुकृत किया था मैंने, उदय भया ते आन। नाथविछोहा हूवा यातैं, पै मिलसी या थान ॥ चुप० ॥ ३ ॥ मेरे उरमैं धीरज ऐसा, पति आवै या ठान। तव ही निग्रह ह्वै है तेरा, होनहार उर मान ॥ चुप० ॥ ४ ॥ कहां अजोध्या कहँ या लंका, कहाँ सीता कहँ आन। बुधजन देखो विधिका कारज, आगममाहिं वखान ॥ चुप० ॥ ५ ॥

(५८)

राग-कनड़ी एकतालो।

त्रिभुवननाथ हमारौ, हो जी ये तो जगत उजियारौ ॥ त्रिभुवन० ॥ टेक ॥ परमौदारिक देहके माहीं, परमातम हितकारौ ॥ त्रिभुवन० ॥ १ ॥ सहजैं ही जगमाहिं रह्यौ छै, दुष्ट मिथ्यात अँधारौ। ताकौं हरन करन समकित

रवि, केवलज्ञान निहारौ ॥ त्रिभुवन० ॥ २ ॥ त्रिविध शुद्ध भवि इनकौं पूजौ, नाना भक्ति उचारौ । कर्म काटि बुधजन शिव लै हौ, तजि संसार दुखारौ ॥ त्रिभु० ॥३॥

(५९)

राग–दीपचंदी ।

मेरी अरज कहानी, सुनि केवलज्ञानी ॥ मेरी० ॥ टेक ॥ चेतनके सँग जड़ पुद्गल मिलि, सारी बुधि बौरानी ॥ मेरी० ॥ १ ॥ भव वनमाहीं फेरत मोकौं, लख चौरासी थानी । कौलौं वरनौं तुम सव जानो, जनम मरन दुख-खानी ॥ मेरी० ॥ २ ॥ भाग भलेतैं मिले बुधजनको, तुम जिनवर सुखदानी । मोह फांसिको काटि प्रभूजी, कीजे केवलज्ञानी ॥ मेरी० ॥ ३ ॥

(६०)

तेरी बुद्धिकहानी, सुनि मूढ़ अज्ञानी ॥ तेरी० ॥ टेक॥ तनक विषय सुख लालच लाग्यौ, नंतकाल दुखखानी ॥ तेरी० ॥ १ ॥ जड़ चेतन मिलि बंध भये इक, ज्यौं पय-माहीं पानी । जुदा जुदा सरूप नहिं मानै, मिथ्या एकता मानी ॥ तेरी० ॥ २ ॥ हूं तौ बुधजन दृष्टा ज्ञाता, तन जड़ सरधा आनी । ते ही अविचल सुखी रहैंगे, होय मुक्तिवर प्रानी ॥ तेरी० ॥ ३ ॥

(६१)

राग–ईमन ।

तू मेरा कह्या मान रे निपट अयाना ॥ तू० ॥ टेक ॥ भव वन वाट मात सुत दारा, बंधु पथिकजन जान रे ।

इनतैं प्रीति न ला विछुरैंगे, पावैंगो दुख-खान रे ॥ तू० ॥१॥ इकसे तन आतम मति आनैं, यो जड़ है तू ज्ञान रे । मोह-उदय वश भरम परत है, गुरु सिखवत सरधान रे ॥ तू० ॥ २ ॥ वादल रंग सम्पदा जगकी, छिनमैं जात विलान रे । तमाशवीन वनि यातैं वुधजन, सवतैं ममता हान रे ॥ तू० ॥ ३ ॥

(६२)

राग-ईमन तेतालो ।

हो विधिनाकी मोपै कही तौ न जाय ॥ हो० ॥ टेक ॥ सुलट उलट उलटी सुलटा दे, अदरस पुनि दरसाय ॥ हो० ॥१॥ उर्वशि नृत्य करत ही सनमुख, अमर परत हैं पॉय (?) । ताही छिनमैं फूल वनायौ, धूप परैं कुम्हलाय (?) ॥हो०॥२॥ नागा पॉय फिरत घर घर जव, सो कर दीनौं राय । ताहीको नरकनमैं कूकर, तोरि तोरि तन खाय ॥ हो० ॥३॥ करम उदय भूलै मति आपा, पुरुषारथको त्याय । वुधजन ध्यान धरै जव मुहुरत, तव सव ही नसि जाय ॥ हो०॥४॥

(६३)

० जिनवानीके सुनेसौं मिथ्यात मिटै । मिथ्यात मिटै समकित प्रगटै ॥ जिनवानी० ॥ टेक ॥ जैसैं प्रात होत रवि ऊगत, रैन तिमिर सव तुरत फटै ॥ जिनवानी० ॥ १ ॥ अनादि कालकी भूलि मिटावै, अपनी निधि घटमैं उघटै । त्याग विभाव सुभाव सुधारै, अनुभव करतां करम कटै ॥ जिनवानी० ॥ २ ॥ और काम तजि सेवो याकौं, या विन नाहिं अज्ञान घटै ॥ वुधजन याभव परभवमाहीं, याकी हुंडी पटै ॥ जिनवानी० ॥ ३ ॥

(६४)

सम्यग्ज्ञान विना, तेरो जनम अकारथ जाय ॥ सम्यग्ज्ञान० ॥ टेक ॥ अपने सुखमैं मगन रहत नहिं, परकी लेत बलाय। सीख सुगुरुकी एक न मानै, भव भवमैं दुख पाय ॥ सम्यग्ज्ञान० ॥ १ ॥ ज्यौं कपि आप काठ-लीलाकरि, प्रान तजै बिललाय। ज्यौं निज मुखकरि जाल-मकरिया, आप मरै उलझाय ॥ सम्यग्ज्ञान० ॥ २ ॥ कठिन कमायो सब धन ज्वारी, छिनमैं देत गमाय। जैसैं रतन पायके भोंदू, बिलखै आप गमाय ॥ सम्यग्ज्ञान० ॥ ३ ॥ देव शास्त्र गुरुको निहचैकरि, मिथ्यामत मति ध्याय। सुरपति वांछा राखत याकी, ऐसी नर परजाय ॥ सम्यग्ज्ञान०

(६५)

राग—झंझोटी।

शिवथानी निशानी जिनवानि हो ॥ शिव० ॥ टेक ॥ भववनभ्रमन निवारन-कारन, आपा-पर-पहचानि हो ॥ शिव० ॥ १ ॥ कुमति पिशाच मिटावन लायक, स्याद् मंत्र मुख आनि हो ॥ शिव० ॥ २ ॥ बुधजन मनवचतन-करि निशिदिन, सेवो सुखकी खानि हो ॥ शिव० ॥ ३ ॥

(६६)

देखो नया, आज उछाव भया ॥ देखो० ॥ टेक ॥ चंदपुरीमैं महासेन घर, चंदकुमार जया ॥ देखो० ॥ १ ॥ मातलखमनासुतको गजपै, लै हरि गिरपै गया ॥ देखो० ॥ २ ॥ आठ सहस कलसा सिर ढारे, वाजे वजत नया ॥ देखो० ॥ ३ ॥ सोंपि दियो पुनि मात गोदमैं, तांडव

नृत्य थया ॥ देखो० ॥ ४ ॥ सो वानिक लखि बुधजन हरषै, जै जै पुरमें किया ॥ देखो० ॥ ५ ॥

(६७)

मैं देखा अनोखा ज्ञानी वे ॥ मैं० ॥ टेक ॥ लारैं लागि आनकी भाई, अपनी सुध विसरानी वे ॥ मैं० ॥ १ ॥ जा कारनतैं कुगति मिलत है, सो ही निजकर आनी वे ॥ मैं० ॥ २ ॥ झूठे सुखके काज सयानें, क्यौं पीड़ै है प्रानी वे ॥ मैं० ॥ ३ ॥ दया दान पूजन व्रत तप कर, बुधजन सीख वखानी वे ॥ मैं० ॥ ४ ॥

(६८)

राग—जंगलो ।

मेरो मनुवा अति हरषाय, तोरे दरसनसौं ॥ मेरो० ॥ टेक ॥ शांत छवी लखि शांतभाव ह्वै, आकुलता मिट जाय, तोरे दरसनसौं ॥ मेरो० ॥ १ ॥ जब लौं चरन निकट नहिं आया, तब आकुलता थाय । अब आवत ही निज निधि पाया, निति नव मंगल पाय, तोरे दरसनसौं ॥ मेरो० ॥ २ ॥ बुधजन अरज करै कर जोरै, सुनिये श्री-जिनराय । जब लौं मोख होय नहिं तब लौं, भक्ति करूं गुन गाय, तोरे दरसनसौं ॥ मेरो० ॥ ३ ॥

(६९)

मोहि अपना कर जान, ऋषभजिन! तेरा हो ॥ मोहि० ॥ टेक ॥ इस भवसागरमाहिं फिरत हूं, करम रह्या करि घेरा हो ॥ मोहि० ॥ १ ॥ तुमसा साहिब और न मिलिया, सह्या भौत भटभेरा हो ॥ मोहि० ॥ २ ॥ बुधजन अरज करै निशि वासर, राखौ चरनन चेरा हो ॥ मोहि० ॥ ३ ॥

(७०)

मैं तेरा चेरा, अरज सुनो प्रभु मेरा ॥ मैं० ॥ टेक ॥ अष्टकर्म मोहि घेरि रहे हैं, दुख दे हैं वहुतेरा ॥ मैं० ॥ १ ॥ दीनदयाल दीन मो लखिकै, मैटो गति गति फेरा ॥ मैं० ॥ २ ॥ और जँजाल टाल सव मेरा, राखो चरनन चेरा ॥ मैं० ॥ ३ ॥ वुधजनओर निहारि कृपा करि, विनवै वारंवेरा ॥ मैं० ॥ ४ ॥

(७१)

राग-अहिंग।

तैं क्या किया नादान, तै तो अंमृत तजि विष लीना ॥ तैं० ॥ टेक ॥ लख चौरासी जौनिमाहितै, श्रावक कुलमैं आया। अव तजि तीन लोकके साहिव, नवग्रह पूजन धाया ॥ तैं० ॥ १ ॥ वीतरागके दरसनहीतैं, उदासीनता आवै। तू तौ जिनके सनमुख ठाड़ा, सुतको ख्याल खिलावै ॥ तैं० ॥ २ ॥ सुरग सम्पदा सहजैं पावै, निश्चय मुक्ति मिलावै। ऐसी जिनवर पूजनसेती, जगत कामना चावै ॥ तैं० ॥ ३ ॥ वुधजन मिलैं सलाह कहै तव, तू वापै खिजि जावै। जथा जोगकौं अजथा मानै, जनम जनम दुख पावै ॥ तैं० ॥ ४ ॥

(७२)

राग-खंमाच।

सुनियो हो प्रभु आदि-जिनंदा, दुख पावत है वंदा[1] ॥ सुनियो० ॥ टेक ॥ खोसि ज्ञान धन कीनौ जिंदा (?), डारि

---

1 वारंवार।

ठगौरी धंदा ॥ सुनियो० ॥ १ ॥ कर्म दुष्ट मेरे पीछैं लाग्यौ, तुम हो कर्मनिकंदा ॥ सुनियो० ॥ २ ॥ बुधजन अरज करत है साहिब, काटि कर्मके फंदा ॥ सुनियो०॥३॥

(७३)

राग-खंमाच।

छवि जिनराई राजै छै ॥ छवि० ॥ टेक ॥ तरु अशोकतर सिंहासनपै, वैठे धुनि घन गाजै छै ॥ छवि० ॥ १ ॥ चमर छत्र भामंडलदुतिपै, कोटि भानदुति लाजै छै। पुष्पवृष्टि सुर नभतैं दुंदुभि, मधुर मधुर सुर वाजै छै ॥ छवि० ॥ २ ॥ सुर नर मुनि मिलि पूजन आवैं, निरखत मनड़ो छाजै छै। तीनकाल उपदेश होत है, भवि बुधजन हित काजै छै ॥ छवि० ॥ ३ ॥

(७४)

राग-खंमाच।

ऐसा ध्यान लगावो भव्य जासौं, सुरग मुकति फल पावो जी ॥ ऐसा० ॥ टेक ॥ जामैं वंध परै नहिं आगैं, पिछले वंध हटावो जी ॥ ऐसा० ॥१॥ इष्ट अनिष्ट कल्पना छांड़ो, सुख दुख एक हि भावो जी। पर वस्तुनिसौं ममत निवारो, निज आतम लौ ल्यावो जी ॥ ऐसा० ॥ २ ॥ मलिन देहकी संगति छूटै, जामन मरन मिटावो जी। शुद्ध चिदानंद बुधजन ह्वै कै, शिवपुरवास वसावो जी ॥ ऐसा० ॥ ३ ॥

(७५)

राग-खंमाच।

मेरा सांई तौ मोमैं नाहीं न्यारा, जानैं सो जाननहारा ॥ मेरा० ॥ टेक ॥ पहले खेद सह्यौ विन जानैं, अव सुख

अपरंपारा ॥ मेरा० ॥ १ ॥ अनत-चतुष्टय-धारक ज्ञायक, गुन परजै द्रव सारा। जैसा राजत गंधकुटीमैं, तैसा मुझमैं म्हारा ॥ मेरा० ॥ २ ॥ हित अनहित मम पर विकलपतैं, करम वंध भये भारा। ताहि उदय गति गति सुख दुखमैं, भाव किये दुखकारा ॥ मेरा० ॥ ३ ॥ काल-लवधि जिनआगमसेती, संशयभरम विदारा। वुधजन जान करावन करता, हौं ही एक हमारा ॥ मेरा० ॥ ४ ॥

(७६)

राग—गारो जल्द तेतालो।

म्हांरी भी सुणि लीज्यौं, हो मोकौं तारणा, सुफल भये लखि मोरे नैंन ॥ म्हांरी० ॥ टेक ॥ तुम अनंत गुन ज्ञान भरे हो, वरंनन करत देव थकत हैं, कहि न सकै मुझ वैंन ॥ म्हांरी० ॥ १ ॥ हम तो अनत दिन अनत भरम रहे, तुमसा कोऊ नाहिं देखिये, आनँदघन चित चैंन ॥ म्हांरी० ॥ २ ॥ वुधजन चरन शरन तुम लीनी, वांछा मेरी पूरन कीजे, संग न रहै दुखदैन ॥ म्हां० ॥३॥

(७७)

राग—गारो कान्हरो।

थांका गुण गास्यां जी आदिजिनंदा ॥ थांका० ॥ टेक ॥ थांका वचन सुण्यां प्रभु मूनैं, म्हारा निज गुण भास्यां जी ॥ आदि० ॥ १ ॥ म्हांका सुमन कमलमैं निशि दिन, थांका चरन वसास्यां जी ॥ आदि० ॥ २ ॥ मूनैं लगन लगी छै, सुख द्यो दुःख नसास्यां जी ॥

॥ ३ ॥ वुधजन हरष हिये अधिकाई, शिवपुरवासा पास्यां जी ॥ आदि० ॥ ४ ॥

(७८)

राग—कान्हरो ।

हो मना जी, थारी वानि, बुरी छै दुखदाई ॥ हो० ॥ टेक ॥ निज कारिजमैं नेकु न लागत, परसौं प्रीति लगाई ॥ हो० ॥ १ ॥ या सुभावसौं अति दुख पायो, सो अब त्यागो भाई ॥ हो० ॥ २ ॥ वुधजन औसर भागन पायो, सेवो श्रीजिनराई ॥ हो० ॥ ३ ॥

(७९)

राग—गारो कान्हरो ।

हो प्रभुजी, म्हारो छै नादानी मनड़ो ॥ हो० ॥ टेक॥ हूं ल्यावत तुम पद सेवनकौं, यौ नहिं आवत है—वगड़ो जी ॥ हो० ॥ १ ॥ याकौ सुभाव सुधारि दयानिधि, माचि रह्यौ मोटो झगड़ो जी ॥ हो० ॥ २ ॥ वुधजनकी विनती सुन लीजे, कंहजे शिवपुरको डगड़ो जी ॥ हो० ॥३॥

(८०)

रे मन मेरा, तू मेरो कह्यौ मान मान रे ॥ रे मन० ॥ टेक ॥ अनत चतुष्टय धारक तूही, दुख पावत वहुतेरा ॥ रे मन० ॥ १ ॥ भोग विषयका आतुर ह्वैकै, क्यौं होता है चेरा ॥ रे मन० ॥ २ ॥ तेरे कारन गति गतिमाहीं, जनम लिया है घनेरा ॥ रे मन० ॥ ३ ॥ जिनचरन शरन गहि वुधजन, मिटि जावै भव ॥ रे मन० ॥ ४ ॥

(८१)

ज्ञान विन थान न पावौंगे, गति गति फिरौंगे अजान ॥ ज्ञान० ॥ टेक ॥ गुरुउपदेश लह्यौ नहिं उरमैं, गह्यौ नहीं सरधान ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ विषयभोगमैं राचि रहे करि, आरति रौद्र कुध्यान । आन-आन लखि आन भये तुम, परनति करि लई आन ॥ ज्ञान० ॥ २ ॥ निपट कठिन मानुष भव पायौ, और मिले गुनवान । अव बुधजन जिनमतको धारौ, करि आपा पहिचान ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥

(८२)

राग—केदारो, एकतालो ।

अहो मेरी तुमसौं वीनती, सब देवनिके देव ॥ अहो० ॥ टेक ॥ वे दूषनजुत तुम निरदूषन, जगत हितू स्वयमेव ॥ अहो० ॥ १ ॥ गति अनेकमैं अति दुख पायौ, लीनैं जन्म अछेव । हो संकट—हर दे बुधजनकौं, भव भव तुम पदसेव ॥ अहो० ॥ २ ॥

(८३)

राग—केदारो ।

याही मानौं निश्चय मानौं, तुम विन और न मानौं ॥ याही० ॥ टेक ॥ अवलौं गति गतिमैं दुख पायौ, नहिं लायौ सरधानौं ॥ याही० ॥ १ ॥ दुष्ट सतावत कर्म निरंतर, करौ कृपा इन्हैं भानौं । भक्ति तिहारी भव भव [illegible] जौलौं लहौं शिवथानौं ॥ याही० ॥ २ ॥

(०८४)

राग-सोरठ।

भोगांरा[1] लोभीड़ा, नरभव खोयौ रे अजान ॥ भोगांरा० ॥ टेक ॥ धर्मकाजकौ कारन थौ यौ, सो भूल्यां तू बान। हिंसा अँनृत परतिय चोरी, सेवत निजकरि जान ॥ भोगांरा० ॥ १ ॥ इंद्रीसुखमैं मगन हुवौ तू, परकौं आतम मान। वंध नवीन पड़े छै यातैं, होवत मौटी हान ॥ भोगांरा० ॥ २ ॥ गयौ न कछु जो चेतौ बुधजन, पावौ अविचल थान। तन है जड़ तू दृष्टा ज्ञाता, कर लै यौं सरधान ॥ भोगांरा० ॥ ३ ॥

(०८५)

म्हारी कौन सुनै, थे तौ सुनि ल्यो श्रीजिनराज ॥ म्हारी० ॥ टेक ॥ और सरब मतलबके गाहक, म्हांरौ सरत न काज। मोसे दीन अनाथ रंककौं, तुमतैं बनत इलाज ॥ म्हांरी० ॥ १ ॥ निज पर नेकु दिखावत नाहीं, मिथ्या तिमिर समाज। चंदप्रभू परकाश करौ उर, पाऊं धाम निजाज ॥ म्हांरी० ॥ २ ॥ थकित भयौ हूं गति गति फिरतां, दर्शन पायौ आज। वारंवार वीनवै बुधजन, सरन गहेकी लाज ॥ म्हांरी० ॥ ३ ॥

(०८६)

राग-सोरठ।

छिन न विसारां चितसौं, अजी हो प्रभुजी थांनैं ॥ छिन० ॥ टेक ॥ वीतरागछवि निरखत नयना, हरष भयौ सो उर ही जानै ॥ छिन० ॥ १ ॥ तुम मत खारक

[1] भोगोंका लोभी।

दाख चाखिकै, आन निंमोरी[1] क्यौं मुख आनै । अब तौ सरनैं राखि रावरी, कर्म दुष्ट दुख दे छै म्हांनै ॥ छिन० ॥ २ ॥ वम्यौ मिथ्यामत अम्रत चाख्यौं, तुम भाख्यौ धार्‍यौ मुझ कानै । निशि दिन थांको दर्श मिलौ मुझ, बुधजन ऐसी अरज बखानै ॥ छिन० ॥ ३ ॥

(८७)

बन्यौ म्हारै या घरीमैं रंग ॥ बन्यौ० ॥ टेक ॥ तत्त्वारथकी चरचा पाई, साधरमीकौ संग ॥ बन्यौ० ॥ १ ॥ श्रीजिनचरन बसे उरमाहीं, हरष भयौ सब अंग । ऐसी विधि भव भवमैं मिलिज्यौ, धर्मप्रसाद अभंग॥बन्यौ० ॥२॥

(८८)

राग–सोरठ ।

कींपर[2] करौ जी गुमान, थे तौ के[3] दिनका मिजमान ॥ कींपर० ॥ टेक ॥ आये कहांतै कहां जावौगे, ये उर राखौ ज्ञान ॥ कींपर० ॥ १ ॥ नारायण बलभद्र चक्रवति, नाना रिद्धिनिधान । अपनी अपनी बारी भुगतिर, पहुँचे परभव थान ॥ कींपर० ॥ २ ॥ झूठ बोलि मायाचारीतै, मति पीड़ौ परप्रान । तन धन दे अपने वश बुधजन, करि उपगार जहान ॥ कींपर० ॥ ३ ॥

(८९)

राग–सोरठ, एकतालो ।

चंदाप्रभु देव देख्या दुख भाग्यौ ॥ चंदा० ॥ टेक ॥ धन्य दैहाड़ो मन्दिर आयौ, भाग अपूरब जाग्यौ ॥ चंदा०

---

१ नीमकी फली–निम्बोरी । २ किमपर । ३ दिन ।

॥ १ ॥ रह्यौ भरम तव गति गति डोल्यौ, जनम-मरन-दौं दाग्यौ । तुमको देखि अपनपौ देख्यौ, सुख समतारस पाग्यौ ॥ चंदा० ॥ २ ॥ अब निरभय पद वेग हि पास्यौं, हरष हिये यौ लाग्यौ । चरनन सेवा करै निरंतर, बुधजन गुन अनुराग्यौ ॥ चंदा० ॥ ३ ॥

(९०)

राग-सोरठ ।

ज्ञानी थारी रीतिरौ अचंभौ मोनैं आवै छै ॥ ज्ञानी० ॥ टेक ॥ भूलि सकति निज परवश ह्वै क्यौं, जनम जनम दुख पावै छै ॥ ज्ञानी० ॥ १ ॥ क्रोध लोभ मद माया करि करि, आपौ आप फँसावै छै । फल भोगनकी वेर होय तब, भोगत क्यौं पिछतावै छै ॥ ज्ञानी० ॥ २ ॥ पाप काज करि धनकौं चाहै, धर्म विषैमैं बतावै छै । बुधजन नीति अनीति बनाई, सांचौ सौ बतरावै छै ॥ ज्ञानी० ॥ ३ ॥

(९१)

अब घर आये चेतनराय, सजनी खेलौंगी मैं होरी ॥ अब० ॥ टेक ॥ आरस सोच कानि कुल हरिकै, धरि धीरज बरजोरी ॥ सजनी० ॥ १ ॥ बुरी कुमतिकी बात न बूझै, चितवत है मोओरी । वा गुरुजनकी बलि बलि जाऊं, दूरि करी मति भोरी ॥ सजनी० ॥ २ ॥ निज सुभाव जल हौज भराऊं, घोरूं निजरँग रोरी । निज ल्यौं ल्याय शुद्ध पिचकारी, छिरकन निज मति दोरी ॥ सजनी० ॥ ३ ॥ गाय रिझाय आप वश करिकै, जावन द्यौं नहि पोरी । बुधजन रचि मचि रहूं निरंतर, शक्ति अपूरव मोरी ॥ सजनी० ॥ ४ ॥

(९२)

राग—सोरठ।

कर लै हो जीव, सुकृतका सौदा कर लै, परमारथ कारज कर लै हो ॥ करि० ॥ टेक ॥ उत्तम कुलकौं पायकै, जिनमत रतन लहाय। भोग भोगवे कारनैं, क्यौं शठ देत गमाय ॥ सौदा० ॥ १ ॥ व्यापारी वनि आइयौ, नरभव हाट वजार। फल दायक व्यापार करि, नातर वि-पति तयार ॥ सौदा० ॥ २ ॥ भव अनन्त धरतौ फिर्‌यौ, चौरासी वनमाहिं। अव नरदेही पायकैं, अघ खोवै क्यौं नाहिं ॥ सौदा० ॥ ३ ॥ जिनमुनि आगम परखकै, पूजौ करि सरधान। कुगुरु कुदेवके मानतैं, फिर्‌यौ चतुर्गति थान ॥ सौदा० ॥ ४ ॥ मोह नींदमां सोवतां, डूवौ काल अटूट। वुधजन क्यौं जागौ नहीं, कर्म करत है लूट ॥ सौदा० ॥ ५ ॥

(९३)

राग—सोरठ।

वेगि सुधि लीज्यौ म्हारी, श्रीजिनराज ॥ वेगि० ॥ टेक ॥ डरपावत नित आयु रहत है, संग लग्या जमराज ॥ वेगि० ॥१॥ जाके सुरनर नारक तिरजग, सव भोजनके साज। ऐसौ काल हर्‌यौ तुम साहव, यातैं मेरी लाज ॥ वेगि० ॥ २ ॥ परघर डोलत उदर भरनकौं, होत प्राततैं सांज। डूवत आश अथाह जलधिमैं, द्यो समभाव जिहाज ॥ वेगि० ॥ ३ ॥ घना दिनाकौ दुखी दयानिधि, औसर पायौ आज। वुधजन सेवक ठाढ़ौ विनवै, कीज्यौ मेरौ काज ॥ वेगि० ॥ ४ ॥

(९४)

राग–सोरठ।

गुरुने पिलाया जी; ज्ञान पियाला ॥ गुरु० ॥ टेक ॥ भइ बेखबरी परभावांकी, निजरसमैं मतवाला ॥ गुरु० ॥ १ ॥ यो तो छाक जात नहिं छिनहूं, मिटि गये आन जँजाला। अदभुत आनँद मगन ध्यानमैं, बुधजन हाल सम्हाला ॥ गुरु० ॥ २ ॥

(९५)

राग–सोरठ।

मति भोगन राचौ जी, भव भवमैं दुख देत घना ॥ मति० ॥ टेक ॥ इनके कारन गति गतिमाहीं, नाहक नाचौ जी। झूठे सुखके काज धरममैं, पाड़ौ खांचौ जी ॥ मति० ॥ १ ॥ पूरव कर्म उदय सुख आयां, राचौ माचौ जी। पाप उदय पीड़ा भोगनमैं, क्यौं मन काचौ जी ॥ मति० ॥ २ ॥ सुख अनन्तके धारक तुम ही, पर क्यौं जांचौ जी। बुधजन गुरुका वचन हियामैं, जानौं सांचौ जी ॥ मति० ॥ ३ ॥

(९६)

थांका गुन गास्यां जी जिनजी राज, थांका दरसनतैं अघ नास्या ॥ थांका० ॥ टेक ॥ थां सारीखा तीनलोकमैं, और न दूजा भास्या जी ॥ जिनजी० ॥१॥ अनुभव रसतैं सींचि सींचिकै, भव आताप बुझास्यां जी। बुधजनकौ विकलप सब भाग्यौ, अनुक्रमतैं शिव पास्यां जी ॥ जिनजी० ॥ २ ॥

(९७)

राग-सोरठ।

हमकौं कछू भय ना रे, जान लियौ संसार॥ हमकौं० टेक॥ जो निगोदमैं सो ही मुझमैं, सो ही मोखमँझार। निश्चय भेद कछू भी नाहीं, भेद गिनै संसार॥ हमकौं० ॥ १ ॥ परवश ह्वै आपा विसारिकै, राग दोषकौं धार। जीवत मरत अनादि कालतैं, यौं ही है उरझार॥ हमकौं० ॥ २ ॥ जाकरि जैसैं जाहि समयमैं, जो होतव जा द्वार। सो वनि है टरि है कछु नाहीं, करि लीनौं निरधार॥ हमकौं० ॥ ३ ॥ अगनि जरावै पानी वोवै, विछुरत मिलत अपार। सो पुद्गल रूपी मैं बुधजन, सबकौ जाननहार॥ हमकौं० ॥ ४ ॥

(९८)

राग-सोरठ।

आज तौ वधाई हो नाभिद्वार॥ आज० ॥ टेक॥ मरुदेवी माताके उरमैं, जनमै ऋषभकुमार॥ आज० ॥१॥ सची इन्द्र सुर सब मिलि आये, नाचत है सुखकार। हरषि हरषि पुरके नरनारी, गावत मंगलचार॥ आज० ॥ २ ॥ ऐसौ वालक हूवो ताकै, गुनकौ नाहीं पार। तन मन वचतैं वंदत बुधजन, है भव-तारनहार॥ आज०॥३॥

(९९)

सुणिल्यो जीव सुजान, सीख सुगुरु हितकी कही॥ सुणि० ॥टेक॥ रुल्यौ अनन्ती वार, गति गति साता ना लही॥ सुणि० ॥ १ ॥ कोइक पुन्य सँजोग, श्रावक कुल नरगति लही।

मिले देव निरदोष, वाणी भी जिनकी कही ॥ सुणि० ॥२॥ चरचाको परसंग, अरु सरध्यामैं वैठिवो। ऐसा औसर फेरि, कोटि जनम नहिं भैंटिवो ॥ सुणि० ॥ ३ ॥ झूठी आशा छोड़ि, तत्त्वारथ रुचि धारिल्यो। यामैं कछु न विगार आपो आप सुधारिल्यो ॥ सुणि० ॥ ४ ॥ तनको आतम मानि, भोग विषय कारज करौ। यौं ही करत अकाज, भव भव क्यौं कूवे परौ ॥ सुणि० ॥ ५ ॥ कोटि ग्रंथकौ सार, जो भाई वुधजन करौ। राग दोष परिहार, याही भवसौं उद्धरौ ॥ सुणि० ॥ ६ ॥

(१००)

राग–सोरठ।

अव थे क्यौं दुख पावौ रे जियरा, जिनमत समकित धारौ ॥ अव० ॥ टेक ॥ निलज नारि सुत व्यसनी मूरख, किंकर करत विगारौ। साहिव सूम अदेखक भैया, कैसें करत गुजारौ ॥ अव० ॥ १ ॥ वाय पित्त कफ खांसी तन दृग, दीसत नाहिं उजारौ। करजदार अरुवेरुजगारी, कोऊ नाहिं सहारौ ॥ अव० ॥ २ ॥ इत्यादिक दुख सहज जानियौ, सुनियौ अव विस्तारौ। लख चौरासी अनत भवनलौं, जनम मरन दुख भारौ ॥ अव० ॥ ३ ॥ दोपरहित जिनवरपद पूजौ, गुरु निरग्रंथ विचारौ। वुधजन धर्म दया उर धारौ, व्है है जै जैकारौ ॥ अव० ॥ ४ ॥

(१०१)

राग–सोरठ।

म्हांरौ मन लीनौ छै थे मोहि, आनँदघन जी ॥ म्हारो०

॥ टेक ॥ ठौर ठौर सारे जग भटक्यौ, ऐसो मिल्यौ नहिं कोय। चंचल चित मुझि अचल भयौ है, निरखत चरनन तोय ॥ म्हांरौ० ॥ १ ॥ हरष भयौ सो उर ही जानैं, वरनौं जात न सोय। अनतकालके कर्म नसैंगे, सरधा आई जोय ॥ म्हांरौ० ॥ २ ॥ निरखत ही मिथ्यात मिट्यौ सब, ज्यौं रवितैं दिन होय। बुधजन उरमैं राजौ नित प्रति, चरनकमल तुम दोय ॥ म्हांरौ० ॥ ३ ॥

(१०७)

राग—सोरठ।

आनँद हरष अपार, तुम भैंटत उरमै भया ॥ आनंद० ॥ टेक ॥ नास्या तिमिर मिथ्यात, समकित सूरज ऊगिया ॥ आनँद० ॥ १ ॥ मिटि गयौ भव आताप, समता रससौं सींचिया। जान्या जगत असार, निज नरभवपद लखि लिया ॥ आनँद० ॥ २ ॥ परमौदारिक काय, शुद्धातम पद तुम धरे। दोष अठारै नाहिं, अनत चतुष्टय गुन भरे॥ ॥ आनँद० ॥ ३ ॥ उपजी तीर्थविभूति, कर्म घातिया सब हरे। तत्त्वारथ उपदेश, देव धर्म सनमुख करे ॥ आनँद० ॥ ४ ॥ शोभा कहिय न जाय, सिंहासन गिर मेरसौं। कलपवृक्षके फूल, वरपत हैं चहुँओरसौं ॥ आनँद ॥ ५ ॥ बाजत दुंदभि जोर, सुनि हरपत भवि घोरसौं। भामंडल भव देखि, छूटत हैं भवि सोरसौं ॥ आनँद० ॥ ६ ॥ तीन छत्र निशि चंद, तीन लोक सेवा करैं। चौसठ चमर सफेद, गंधोदकसे सिर ढरैं ॥ आनँद० ॥ ७ ॥ वृक्ष

अशोक अनूप, शोक सरव जनकौ हरै। उपमा कहिय न जाय, बुधजन पद वंदन करै ॥ आनँद० ॥ ८ ॥

(१०३)

राग—विहाग।

सीख तोहि भाषत हूं या, दुख मैंटन सुख होय ॥ सीख० ॥ टेक ॥ त्यागि अन्याय कषाय विषयकौं, भोगि न्याय ही सोय ॥ सीख० ॥ १ ॥ मंडै धरमराज नहिं दंडै, सुजस कहै सब लोय। यह भौ सुख परभौ सुख हो है, जन्म जन्म मल धोय ॥ सीख० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म न पूजौ, प्रान हरौ किन कोय। जिनमत जिनगुरु जिनवर सेवौ, तत्त्वारथ रुचि जोय ॥ सीख० ॥ ३ ॥ हिंसा अँनृत परतिय चोरी, क्रोध लोभ मद खोय। दया दान पूजा संजम कर, बुधजन शिव है तोय ॥ सीख० ॥४॥

(१०४)

तेरौ गुन गावत हूं मैं, निजहित मोहि जताय दे ॥ तेरौ० ॥ टेक ॥ शिवपुरकी मोकौं सुधि नाहीं, भूलि अनादि मिटाय दे ॥ तेरौ० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरत हूं भव वनमाहीं, शिवपुर वाट वताय दे। मोह नींदवश घूमत हूं नित, ज्ञान बधाय जगाय दे ॥ तेरौ० ॥ २ ॥ कर्म शत्रु भव भव दुख दे हैं, इनतैं मोहि छुटाय दे। बुधजन तुम चरना सिर नावै, एती बात बनाय दे ॥ तेरौ० ॥ ३ ॥

(१०५)

राग—विहाग।

। बावला हो गया ॥ मनुवा० ॥ टेक ॥ परवश

वसतु जगतकी सारीं, निज वश चाहै लया ॥ मनुवा० ॥ १ ॥ जीरन चीर मिल्या है उदय वश, यौ मांगत क्यों नया ॥ मनुवा० ॥ २ ॥ जो कण वोया प्रथम भूमिमैं, सो कव्र औरै भया ॥ मनुवा० ॥ ३ ॥ करत अकाज आनकौं निज गिन, सुधपद त्याग दया ॥ मनुवा० ॥ ४ ॥ आप आप चोरत विषयी है, वुधजन ढीठ भया ॥ मनुवा० ॥ ५ ॥

(१०६)

भज जिन चतुर्विंशति नाम ॥ भजि० ॥ टेक ॥ जे भजे ते उतरि भवदधि, लयौ शिव सुखधाम ॥ भज० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनंदन अभिराम । सुमति पद्म सुपास चंदा, पुष्पदंत प्रनाम ॥ भज० ॥ २ ॥ शीत श्रेयान् वासुपूजा, विमल नन्त सुठाम । धर्म सांति जु कुंथु अरहा, मल्लि राखै माम ॥ भज० ॥ ३ ॥ मुनिसुवृत नमि नेमिनाथा, पार्स सन्मति स्वाम । राखि निश्चय-जपौ वुधजन, पुरै सवकी काम ॥ भज० ॥ ४ ॥

(१०७)

राग–मालकोस ।

अव तू जान रे चेतन जान, तेरी होवत है नित हान ॥ अव० ॥ टेक ॥ रथ वाजि करी असवारी, नाना विधि भोग तयारी । सुंदर तिय सेज सँवारी, तन रोग भयौ या ख्वारी ॥ अव० ॥ १ ॥ ऊंचे गढ़ महल वनाये, वहु तोप सुभट रखवाये । जहाँ रुपया मुहर धराये, सव

छांड़ि चले जम आये ॥ अव० ॥ २ ॥ भूखा है खाने लागै, धाया पट भूषण पागै । सत भये सहस लखि मांगै, या तिसना नाहीं भागै ॥ अव० ॥ ३ ॥ ये अथिर सौंज परिवारौ, थिर चेतन क्यौं न सम्हारौ । वुधजन ममता सव टारौ, सव आपा आप सुधारौ ॥ अव० ॥ ४ ॥

(१०८)

राग-कालिंगड़ो परज धीमो तेतालो ।

म्हे तौ थांका चरणां लागां, आन भावकी परणति त्यागां ॥ म्हे० ॥ टेक ॥ और देव सेया दुख पाया, थे पाया छौ अव वड़भागां ॥ म्हे० ॥ १ ॥ एक अरज म्हांकी सुण जगपति, मोह नींदसौं अवकै जागां । निज सुभाव थिरता वुधि दीजे, और कछू म्हे नाहीं मांगां ॥ म्हे० ॥ २ ॥

(१०९)

राग-कालिंगड़ो ।

आज मनरी वनी छै जिनराज ॥ आज० ॥ टेक ॥ थांको ही सुमरन थांको ही पूजन, थांको ही तत्त्वविचार ॥ आज० ॥ १ ॥ थांके विछुरै अति दुख पायौ, मोपै कह्यौ न जाय । अव सनमुख तुम नयनौं निरखे, धन्य मनुष परजाय ॥ आज० ॥ २ ॥ आज हि पातक नास्यौ मेरौ, ऊतरस्यौं भव पार । यह प्रतीत वुधजन उर आई, लेस्यौं शिवसुख सार ॥ आज० ॥ ३ ॥

(११०)

हो जी म्हे निशिदिन ध्यावां, ले ले वलहारियां ॥ हो जी०

॥ टेक ॥ लोकालोक निहारक स्वामी, दीठे नैन हमारियां ॥ हो जी० ॥ १ ॥ पट चालीसों गुनके धारक, दोष अठारह टालियां । बुधजन शरनैं आयो थांके, थे शरणागत पालियां ॥ हो जी० ॥ २ ॥

(१११)

राग—परज ।

म्हे तो ऊभा राज थांनैं अरज करां छां, मानों महाराज ॥ म्हे० ॥ टेक ॥ केवलज्ञानी त्रिभुवननामी, अंतरजामी सिरताज ॥ म्हे० ॥ १ ॥ मोह शत्रु खोटो संग लाग्यो, कुकृत करै छै अकाज । यातैं वेगि बचावो म्हानैं, थांनैं म्हांकी लाज ॥ म्हे० ॥ २ ॥ चोर चंडाल अनेक उबारे, गीध स्याल मृगराज । तो बुधजन किंकरके हितमैं ढील कहा जिनराज ॥ म्हे० ॥ ३ ॥

(११२)

राग—कालिंगड़ो ।

कुमतीको कारज कूड़ो, हो जी ॥ कुमती० ॥ टेक ॥ थांकी नारि सयानी सुमती, मनो कहै छै रूड़ो जी ॥ कुमती० ॥ १ ॥ अनन्तानुबंधीकी जाई, क्रोध लोभ मद भाई । माया बहिन पिता मिथ्यामत, या कुल कुमती पाई जी ॥ कुमती० ॥ २ ॥ थरको ज्ञान धन वादि लुटावै, राग दोष उपजावै । तब निर्बल लखि पकरि करम रिपु, गति गति नाच नचावै ॥ कुमती० ॥ ३ ॥ या परिकरसों ममत निवारो, बुधजन सीख उचारो । परमसुना सुमती सँग राचो, मुकति महलमैं पधारो ॥ कुमती० ॥ ४ ॥

(११३)

राग-कालिंगड़ो ।

अजी हो जीवा जी थांनैं श्रीगुरु कहै छै, सीख मानौं जी ॥ अजी० ॥ टेक ॥ विन मतलवकी थे मति मानौं, मतलवकी उर आनौं जी ॥ अजी० ॥ १ ॥ राग दोषकी परनति त्यागौ, निज सुभाव थिर ठानौं जी । अलख अ-भेद रु नित्य निरंजन, थे वुधजन पहिचानौं जी ॥ अजी० ॥ २ ॥

(११४)

हूं कव देखूं वे मुनिराई हो ॥ हूं० ॥ टेक ॥ तिल तुष मान न परिग्रह जिनकैं, परमातम ल्यौं लाई हो ॥ हूं० ॥ १ ॥ निज स्वारथके सव ही बांधव, वे परमारथभाई हो । सव विधि लायक शिवमगदायक, तारन तरन सदाई हो ॥ हूं० ॥ २ ॥

(११५)

आयौ जी प्रभु थांपै, करमांरौ पीड़्यौ आयौ ॥ आयौ० ॥ टेक ॥ जे देखे तेई करमनि वश, तुम ही करम नसायौ ॥ आयौ० ॥ १ ॥ सहज स्वभाव नीर शीतलको, अगनि कषाय तपायौ । सहे कुलाहल अनतकालमैं, नरक निगो-द डुलायौ ॥ आयौ० ॥ २ ॥ तुम मुखचंद निहारत ही अव, सव आताप मिटायौ । वुधजन हरष भयौ उर ऐसैं, रतन चिन्तामनि पायौ ॥ आयौ० ॥ ३ ॥

(११६)

राग-परज ।

महाराज, थांनैं सारी लाज हमारी, छत्रत्रयधारी ॥

महाराज० ॥ टेक ॥ मैं तौ थारी अद्भुत रीती, नीहारी हितकारी ॥ महाराज० ॥ १ ॥ निंदक तौ दुख पावै सहजैं, वंदक लै सुख भारी। असी अपूरव वीतरागता, तुम छविमाहिं विचारी ॥ महाराज० ॥ २ ॥ राज त्यागिकैं दीक्षा लीनी, परजनप्रीति निवारी । भये तीर्थंकर महिमाजुत अव, संग लिये रिधि सारी ॥ ३ ॥ मोह लोभ क्रोधादिक मारे, प्रगट दयाके धारी । बुधजन विनवै चरन कमलकौं, दीजे भक्ति तिहारी ॥ महाराज० ॥ ४ ॥

(११७)

मुनि वन आये वना ॥ मुनि० ॥ टेक ॥ शिव वनरी व्याहनकौं उमगे, मोहित भविक जना ॥ मुनि० ॥ १ ॥ रतनत्रय सिर सेहरा वांधैं, सजि संवर वसना। संग वराती द्वादश भावन, अरु दशधर्मपना ॥ मुनि० ॥ २ ॥ सुमति नारि मिलि मंगल गावत, अजपा (?) गीत घना । राग दोपकी अतिशवाजी, छूटत अगनि-कना ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ दुविधि कर्मका दान वटत है. तोपित लोकमना । शुकल ध्यानकी अगनि जला करि, हौमैं कर्मघना ॥ मुनि० ॥ ४ ॥ शुभ वेल्यां शिव वनरि वरी मुनि, अदभुत हरप वना । निज मंदिरमैं निश्चल राजत, बुधजन त्याग घना ॥ मुनि० ॥ ५ ॥

(११८)

लखैं जी आज चंद जिनंद प्रभूकौं, मिथ्यातम मम भागौ ॥ लखैं० ॥टेक ॥ अनादिकालकी तपति मिटी सव,

सूतौ जियरौ जागौ ॥ लखैं० ॥ १ ॥ निज संपति निजही-
मैं पाई, तव निज अनुभव लागौ । बुधजन हरषत आनँद
वरषत, अंमृत झरमैं पागौ ॥ लखैं० ॥ २ ॥

(११९)

थे म्हारे मन भायाजी चंद जिनंदा, वहुत दिनामैं पाया
छौ जी ॥ थे० ॥ टेक ॥ सव आताप गया ततखिन ही,
उपज्या हरष अमंदा ॥ थे० ॥ १ ॥ जे मिलिया तिन ही
दुख भरिया, भई हमारी निंदा । तुम निरखत ही भरम
गुमाया, पाया सुखका कंदा ॥ थे० ॥ २ ॥ गुन अनन्त
मुखतैं किम गाऊं, हारे फनिंद मुनिंदा । भक्ति तिहारी
अति हितकारी, जॉचत बुधजन वंदा ॥ थे० ॥ ३ ॥

(१२०)

मैं ऐसा देहरा वनाऊं, ताकै तीन रतन मुक्ता लगाऊं
॥ मैं० ॥ टेक ॥ निज प्रदेसकी भीत रचाऊं, समता कूली
धुलाऊं । चिदानंदकी मूरति थापूं, लखि लखि आनँद पाऊं
॥ मैं० ॥ १ ॥ कर्म किजोड़ा तुरत बुहारूं, चादर दया
विछाऊं । क्षमा द्रव्यसौं पूजा करिकै, अजपा गान गवा-
ऊं ॥ मैं० ॥ ॥ २ ॥ अनहद वाजे वजे अनौखे, और कछू
नहिं चाऊं । बुधजन यामैं वसौ निरंतर, याही वर मैं
पाऊं ॥ मैं० ॥ ३ ॥

(१२१)

राग—गजल रेखता कालिंगड़ो ।

नरदेहीको धरी तौ कछू धर्म भी करो । विषयोंके संग
राचि क्यों, नाहक नरक परो ॥ नर० ॥ टेक ॥ चौरासि

लाख जौंनि तैंनें, केई वार धरी। तू निजसुभाव पागिकै, पर त्याग ना करी॥ नर० ॥ १ ॥ तू आन देव पूजता है, होय लोभमें। तू जान पूछ क्यों परैं, हैवान कूपमें ॥ नर० ॥ २ ॥ है धनि नसीव तेरा जन्म, जैनकुल भया। अव तो मिथ्यात छोड़ दे, कृतकृत्य हो गया ॥ नर० ॥ ३ ॥ पूरवजनममें जो करम, तूने कमाया है। ताके उदैको पायके, सुख दुःख आया है ॥ नर० ॥ ४ ॥ भला वुरा मानै मती, तू फेरि फँसैगा। वुधजनकी सीख मान, तेरा काज सधैगा ॥ नर० ॥ ५ ॥

(०११२)

ऋपभ तुमसे स्वाल[1] मेरा, तुही है नाथ जगकेरा ॥ ऋपभ० ॥ टेक ॥ सुना इंसाफ है तेरा, ग्रिगरमतलव हितू मेरा ॥ ऋपभ० ॥ १ ॥ हुई अर होयगी अव है, लखौ तुम ज्ञानसुं सव है। इसीसे आपसे कहना, औरसे गरज क्या लहना ॥ ऋपभ० ॥ २ ॥ न मानी सीख सतगुरकी, न जानी वाट निज घरकी। हुआ मद मोहमें माता, घने विपयनके रँग राता ॥ ऋपभ० ॥ ३ ॥ गिना परद्रव्यको मेरा, तवै वसु कर्मने घेरा। हरा गुन ज्ञान धन मेरा, करा विधि जीवको चेरा ॥ ऋपभ० ॥ ४ ॥ नचावै स्वांग रचि मोकों, कहूं क्या खवर सव तोकों। सहज भइ वात अति वॉकी, अधमको आपकी झॉकी ॥ ऋपभ० ॥ ५ ॥ कहूं क्या तुम सिफत[2] सांई, वनत नहिं इन्द्रसों गाई।

---

१ सवाल—याचनाका प्रश्न। २ प्रशंसा।

तिरे भविजीव भव-सरतैं, तुम्हारा नाव उर धरतैं ॥ ऋषभ० ॥ ६ ॥ मेरा मतलब अवर नाहीं, मेरा तो भाव मुझ-माहीं। वाहि पर दीजिये थिरता, अरज बुधजन यही करता ॥ ऋषभ० ॥ ७ ॥

(१२३)

दुनियांका ये हवाल क्यों पहिचानता नहीं। दिन आ-फताब ऊगा, सो रैनको नहीं ॥ दुनि० ॥ टेक ॥ तनसेंति तेरी एकता, क्यों भानता नही। होता है जाना स्यात स्यात, जानता नहीं ॥ दुनि० ॥ १ ॥ नित भूख प्यास शीत घाम, देह व्यापतैं। तू क्यों तमाशवीन दुखी, मान आपतैं ॥ दुनि० ॥ २ ॥ दिलचंदगी दिलगीरी है निज, पुन्य पापतैं। (फिर) करमजाल फँसता क्यों, करि विलाप तैं ॥ दुनि० ॥ ३ ॥ मतलबके गरजी ये सब, कुटुंब घरभरा। मतवाय चढ़ी तेरे, किन सीर ना करा ॥ दुनि० ॥ ४ ॥ इनकी खुशामदीसे, तू केई वार मरा। इतना सयान लीजे, इन वीच क्यों परा ॥ दुनि० ॥ ५ ॥ आई हैं बुलबुल शामको, सब ओर ओरतैं। करि रैनका बसेरा, बिछुरेंगी भोरतैं ॥ दुनि० ॥ ६ ॥ इनपै न नेकु रीझो, खीजो न जोरतैं। भोगोगे विपति भौ भौ, मिथ्यात दौरतैं ॥ दुनि० ॥ ७ ॥ बाजीगरोंका ख्याल जैसा, लोकसम्पदा। इसके दिमाकसेती, दोजकमें झंपदा ॥ दुनि० ॥

---

१ सूर्य। २ तमाशा देखनेवाला। ३ खुशी। ४ रज। ५ सध्याको। घमंडसे।

८ ॥ जल्दी परेज[1] कीजे, परके मिलापका । दिलमस्त रहो वुधजन, लखि हाल आपका ॥ दुनि० ॥ ९ ॥

(१२४)

इस वक्त जो भविकजन, नहिं सावधान होगा । इस गाफिलीसे तेरा, खाना खराव होगा ॥ इस० ॥ टेक ॥ मिथ्यातका अँधेरा, गम नाहिं मेरा तेरा । दिन दोयका वसेरा, चलना सितोंव[2] होगा ॥ इस० ॥ १ ॥ जेवर जहानमाई, दामिनि ज्यों दे दिखाई । इसपै गरूरताई, जिससे जवाल[3] होगा ॥ इस० ॥ २ ॥ ज्वानीमें हुवा जालिम[4], सव देखते हि आलम[5] । रमता विरानी वालम[6], यातै वेहाल होगा ॥ इस० ॥ ३ ॥ झूठे मजेकेमाई[7], सव जिंदगी गमाई । अजहूँ संतोष नाहीं, मरना जरूर होगा ॥ इस० ॥ ४ ॥ जीवोंपै मिहर दीजे, जोरू-परेज[8] कीजे । जरका[9] न लोभ लीजे, वुधजन संवाव[10] होगा ॥ इस० ॥ ५ ॥

(१२५)

कोई भोगको न चाहो, यह भोग वंद वला[11] है ॥ कोई० ॥ टेक ॥ मिलना सहज नहीं है, रहनेकी गम नहीं है, सेनें-सेती[12] सुनी है, रावनसा खाक मिला है ॥ कोई० ॥१॥ वानीतै हिरन हरिया, रसनातै मीन मरिया, करनी[13] करी[14] पकरिया[15], पावक पतंग जला है ॥ कोई० ॥ १ ॥ अलि नासिकाके काजै, वसिया है कौल[16]-मांजै, जव होय

---

१ परहेज–त्याग । २ जल्दी । ३ खरावी । ४ जुल्मकरनेवाला–अन्यायी । ५ मनुष्य । ६ स्त्री । ७ मजेमें । ८ स्त्री–त्याग । ९ धनका । १० पुण्य । ११ बुरी वला है । १२ सेवन करनेसे । १३ हथिनी । १४ हाथी । १५ पकड़ा गया । १६ कमलमें ।

गई सांजै, ततखिन पिरान दला है ॥ कोई० ॥ २ ॥ विषयोंसे रागताई, ले जात नर्कमाई, कोई नहीं सहाई, काटैं तहां गला है ॥ कोई० ॥ ३ ॥ बुधजनकी सीख लीजे, आतुरता त्याग दीजे, जलदी संतोष कीजे, इसमें तेरा भला है ॥ कोई० ॥ ४ ॥

(१२६)

चन्दजिन विलोकवेतैं, फंद गलि गया । धंद सब जगतके विफल, आज लखि लिया ॥ चंद० ॥ टेक ॥ शुद्ध चिदानंद–खंध, पुद्गलके माहिं । पहिचान्या हममें हम, संशय भ्रम नाहिं ॥ चंद० ॥ टेक ॥ सो न ईस सो न दास, सो नहीं है रंक । ऊंच नीच गोत नाहिं, नित्य है निशंक ॥ चंद० ॥ १ ॥ गंध वर्न फरस स्वाद, वीस गुन नहीं । एक आतमा अखंड, ज्ञान है सही ॥ चंद० ॥ २ ॥ परकौं जानि ठानि परकी, वानि पर भया, परकी साथ दुनियांमैं, खेदकौं लया ॥ चंद० ॥३॥ काम क्रोध कपट मान, लोभकौं करा । नारकी नर देव पशू होयके फिरा ॥ चंद० ॥ ४ ॥ ऐसे वखतके वीच ईस, दरस तुम दिया । मिहरवान होय दास आपका किया ॥ चंद० ॥५॥ जौलौं कर्म काटि मोख धाम ना गया । तौलौं बुधजनकौं शर्न राख करि मया ॥ चंद० ॥६॥

(१२७)

मद मोहकी शराव पी खराव हो रहा । वकता है वेहिसाव ना कितावका कहा ॥ मद० ॥ टेक ॥ देता नहीं

---

१ प्राण ।

जवाब तुझे क्या गरूर है। ये वक्त चला जाता, इसकी जरूर है ॥ मद० ॥ १ ॥ जेर जिंदगी जवानी, जाहिर जहानमें। सब सपनेकी दौलत, रहती न ध्यानमें ॥ मद० ॥ २ ॥ झूठे मजेकेमाहीं, सब सम्पदा दई । तेरे ओकूप (?) सेती, तू आपदा लई ॥ मद० ॥ ३ ॥ साहिब है सभीका ये, इसक क्या लिया। करता है ख्याल सबपै, वेशर्म हो गया ॥ मद० ॥ ४ ॥ निज हालका कमाल है, सम्हाल तो करो। सब साहिबी है इसमें, बुधजन निगह धरो ॥ मद० ॥ ५ ॥

(१२८)

राग–मल्हार।

हो राज म्हैं तौ वारी जी, थांनैं देखि ऋषभ जिन जी, अरज करूं चित लाय ॥ हो० ॥ टेक ॥ परिग्रहरहित सहित रिधि नाना, समोसरन समुदाय। दुष्ट कर्म किम जीतियौ जी, धर्म क्षमा उर ध्याय ॥ हो० ॥ १ ॥ निंदनीक दुख भोगवै, वंदक सब सुख पाय। या अदभुत वैरागता जी, मोतै वरनी न जाय ॥ हो० ॥२॥ आन देवकी मानतैं, पाई बहु परजाय। अब बुधजन शरनौं गह्यौ जी, आवागमन मिटाय ॥ हो० ॥ ३ ॥

(१२९)

राग–मल्हार।

देखे मुनिराज आज जीवनमूल वे॥ देखे० टेक ॥ सीस लगावत सुरपति जिनकी, चरन कमलकी धूल वे॥ दे० ॥१॥

---

१ घमंड। २ धन।

सूखी सरिता नीर वहत है, वैर तज्यौ मृग सूर वे। चालत मंद सुगंध पवन वन, फूल रहे सब फूल वे ॥ देखे० ॥२॥ तनकी तनक खबर नहिं तिनकौं, जर जावौ जैसैं तूल वे। रंक रावतैं रंच न ममता, मानत कनककौं धूल वे॥ देखे० ॥ ३ ॥ भेद करत हैं चेतन जड़कौ, मैंटत हैं भवि-भूल वे। उपगारक लखि बुधजन उरमैं, धारत हुकम कवूल वे ॥ देखे० ॥ ४ ॥

(१३०)

राग—मल्हार।

जगतपति तुम हौ श्रीजिनराई॥ जगत० ॥ टेक ॥ और सकल परिग्रहके धारक, तुम त्यागी हौ सांई ॥ जगत० ॥ १ ॥ गर्भमास पँदरै लौं धनपति, रत्नवृष्टि वरसाई। जनम समय गिरिराज शिखरपर, न्हौंन कर्यौ सुरराई ॥ जगत० ॥ २ ॥ सदन त्यागि वनमैं कच लौंचत, इंद्रन पूजा रचाई। सुकलध्यानतैं केवल उपज्यौ, लोकालोक दिखाई ॥ जगत० ॥ ३ ॥ सर्व कर्म हरि प्रगटी शुद्धता, नित्य निरंजनताई। मनवचतन बुधजन वंदत है, द्यो समता सुखदाई ॥ जगत० ॥ ४ ॥

(१३१)

अहो! अब विलम न कीजे हो। भवि कारज कर लीजे हो ॥ अहो० ॥ टेक ॥ चौरासी लख जौनिवीचमैं, नर-भव कब लीजे ॥ अहो० ॥ १ ॥ श्रवन अंजुली धारि जिनेश्वर,—वचनामृत पीजे। निज स्वभावमैं राचि पराई, परनति तजि दीजे ॥ अहो० ॥ २ ॥ तनक विषयहित

काल अनन्ता, भव भव क्यौं छीजे। वुधजन जिनपद सेय सयानैं, अजर अमर जीजे ॥ ३ ॥

(१३२)

राग—गौड़ मल्हार।

सुरनरमुनिजनमोहनकौं मोहि, दर्शन देखन दै री ॥ भव भरमनतैं दुखी फिरत हूं, अव जिन चरनन रहनै दै ॥ सुर० ॥ १ ॥ सूर स्याल कपि सिंह न्यौलकी, विपति हरी इन सरनौं दै। वलिहारी वुधजन या दिनकी, वड़े भाग पद परसन दै ॥ सुर० ॥ २ ॥

(१३३)

राग—रेखता।

अरज जिनराज यह मेरी, इसा औसर वतावोगे ॥ अरज० ॥ टेक ॥ हरो इन दुष्ट करमनको, मुकतिका पद दिलावोगे ॥ अरज० ॥ १ ॥ करूं जव भेप मुनिवरका, अवर विकलप विसारूंगा। रहूंगा आप आपेमें, परिग्रहको निड़ारूंगा ॥ अरज० ॥२॥ फिर्‌या संसार सारेमें, दुखी मैं सव लख्या दुखिया। सुनत जिनवानि गुरुमुखिया, लख्या चेतन परम सुखिया ॥ अरज० ॥ ३ ॥ पराया आपना जाना, वनाया काज मन माना। गहाया कुगति तैखाना, लहाया विपति विललाना ॥ अरज० ॥ ४ ॥ जगतमें जनम अर मरना, डरा मैं आ लिया शरना। मिहर वुधजनपै या करना, हरो परतैं ममत धरना ॥ अरज० ॥ ५ ॥

(१३८)

परमजननी धरमकथनी, भवार्णवपारकौं तरनी ॥ परम० ॥ टेक ॥ अनच्छरि घोष आपतकी, अच्छरजुत गनधरौं बरनी ॥ परम० ॥ १ ॥ निखेपौं-नयनुजोगनितें, भविनकौं तत्त्व अनुसरनी । विथँरनी शुद्ध दरसनकी, मिथ्यातम मोहकी हरनी ॥ परम० ॥ २ ॥ मुकति मंदिरके चढ़नेकौं, सुगमसी सरल नीसरनी । अँधेरे कूपमैं परतां, जगतउद्धारकी करनी ॥ परम० ॥ ३ ॥ तृषाके ताप मेटनकौं, करत अम्रत वचन झरनी । कथंचित्वाद आदरनी, अवर एकान्त परिहरनी ॥ परम० ॥ ४ ॥ तेरा अनुभौ करत मोकौं, बनत आनंद उर भरनी । फिर्यौ संसार दुखिया हूं, गही अब आनि तुम सरनी ॥५॥ अरज बुधजनकी सुन जननी, हरौ मेरी जनम मरनी । नमूं कर जोरि मन वचतें, लगाकैं सीसकौं धरनी ॥ परम० ॥ ६ ॥

(१३९)

राग-बिलावल ।

मेरे आनँद करनकौं, तुम ही प्रभु पूरा ॥ मेरे० ॥ टेक॥ और सबै जगमैं लखे, दूषनजुत कूरा ॥ मेरे० ॥ १ ॥ मोह शत्रुके हरनकौं, तुम ही हौ सूरा । मोकौं मोह दबात है, कर याकौं दूरा ॥ मेरे० ॥ २ ॥ केवलज्ञान छिपात है, ताकौं करि चूरा । ज्यौं प्रगटैं मोमाहिंके, नाना गुन भूरा ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ बुधजन विनती करत है, जिन

---

१ आप-सर्व ज्ञकी । २ निक्षेप नयके अनुयोगसे । ३ विस्तारनी । ४ नसैनी । ५ स्याद्वाद ।

चरन हजूरा। मेरौ संकट मेंटिये, वाजै ज्यौं तूरा ॥ मेरे० ॥ ४ ॥

(•१३६)

राग—परज मारू।

जिनवानी प्यारी लागै छै महाराज। सव दुखहारी अति सुखकारी ॥ जिनवानी० ॥ टेक ॥ अनंत जनमके कर्म मिटत हैं, सुनत हि तनक अवाज ॥ जिनवानी० ॥१॥ षट द्रव्यनकौं कथन करत है, गुन परजाय समाज। हेयाहेय वतावत सिगरे, कहत है काज अकाज ॥ जिनवानी० ॥ २ ॥ नय निखेप परमाण वचनतैं, परमत हरत मिजाज। वुधजन मन-वांछा सव पूरै, अंमृत स्वाद अवाज ॥ जिनवानी० ॥ ३ ॥

(•१३७)

आयो प्रभु तोरे दरवार, सव मो कारज सरिया ॥ आयो० ॥ टेक ॥ निरखत ही तुम चरनन ओर, मोह तिमिर मो हरिया ॥ आयो० ॥ १ ॥ मैं पाई मेरी निधि सार, अवलौं रह्या विसरिया। अव हूवा उर हरष अपार, कृत्य कृत्य तुम करिया ॥ आयो० ॥ २ ॥ जड़ चेतन नहिं मान्या भेद, राग दोष जव धरिया। तव हूवा ये निपट कुज्ञान, करम वंधमै परिया ॥ आयो०॥३॥ इष्ट अनिष्ट सँजोगन पाय, दुष्ट दवानल जरिया। तुम पाये वड़भागनि जोग, निरखत हिय गया हरिया ॥ आयो० ॥ ४ ॥ धारत ही तुम वानी कान, भरम भाव सव ग-

रिया। बुधजनके उर भई प्रतीत, अब भवसागर त-रिया॥ आयो० ॥ ४ ॥

(१३८)

ऐसे प्रभुके गुनन कोउ कैसैं कहै ॥ ऐसे० ॥ टेक ॥ दरस ज्ञान सुख वीर्ज अनन्ता, और अनँत गुन जामैं रहै ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ तीन काल परजाय द्रव्य गुन, एक समय जाकौ ज्ञान गहै ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ जो निज शक्ति गुपत छी अनादी, सो सब प्रगट अब लहलहै ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ नंता-नंत काललौं जाकौ, सांत सुथिर उपयोग बहै ॥ ऐसे०॥४॥ मन वच तनतैं वंदत बुधजन, ऐसे गुननकौं आप चहै ॥ ऐसे० ॥ ५ ॥

(१३९)

राग—ठुमरी।

अब हम निश्चय जान्या हो जिन तुम सरन सहाई। जनम मरनका डर है जगमैं, रोग सोग दुखदाई ॥ अब० ॥ टेक ॥ तुमकौं सेवत समता आई, विपता तुरत भगाई ॥ अब० ॥ १ ॥ अनँत कालमैं जीव अनन्ते, तुमतै शिव-गति पाई। अबहूं भविजन तुमतैं तिरहैं, ये आगममैं गाई ॥ अब० ॥ २ ॥ शत्रु मित्र तेरे कोऊ नहिं, सुख साता यौं आई। अपना भला चहत जे बुधजन, तोकौं सेवैं भाई ॥ अब० ॥ ३ ॥

(१४०)

सुन करि वानी जिनवरकी म्हारै, हरष हियैं न समाय ॥ सुन० ॥ टेक ॥ अनादि कालकी तपन बुझाई, निज

निधि मिली अघाय जी ॥ सुन० ॥ १ ॥ संशय भर्म विप-र्यय नास्या, सम्यक बुधि उपजाय जी ॥ सुन० ॥ २ ॥ अब निरभयपद पाया उरमैं, वंदौं मन वच काय जी ॥ सुन० ॥ ३ ॥ नरभव सुफल भया अब मेरा, बुधजन भेंटत पाँय जी ॥ सुन० ॥ ३ ॥

(१४१)

राग—अल्हैया बिलावल ।

गाफिल हूवा क्या तू डोलै, दिन जाता है भरतीमें ॥ गाफिल० ॥ टेक ॥ चौकस करौ रहत है नाहीं, ज्यौं अँजुली जल झरतीमें । ऐसैं तेरी आयु घटत है, वचै न विरियां मरतीमें ॥ गाफिल० ॥ १ ॥ कंठ दबै तब नाहिं बनैगा, काज बना लै सरतीमें । फिर पछताये कछू न होगा, कूप खुदै नहिं बरतीमें ॥ गाफिल० ॥ २ ॥ मानुष भव तेरा श्रावक कुल, कठिन मिल्या है धरतीमें । बुधजन भवदधि उतरौ चढ़िकैं, समकित नवका तिरतीमें ॥ गाफिल० ॥ ३ ॥

(१४२)

सुमरौ क्यौं ना चन्द जिनेसुर, ज्यौं भवभवकी विपति हरौ ॥ सुमरौ० ॥ टेक ॥ सुरपति नरपति पूजत जिनकौं, सनमुख फनपति नमत खरौ ॥ सुमरौ० ॥ १ ॥ तन धन परिजन—मांझ लुभाकर, क्यौं करमनके फंद परौ ॥ सुमरौ० ॥ २ ॥ मिथ्या तिमिर अनादि रोग दृग, दरसन करिकैं परौ करौ ॥ सुमरौ० ॥ ३ ॥ विषय भोगमैं राचि रहै क्यौं, चारौं गति गति विपति भरौ ॥ सुमरौ० ॥ ४ ॥ बुधजन

आतम ध्यान नाव चढ़ि, भवसागरकौं बेगि तिरौ ॥
सुमरौ० ॥ ५ ॥

(१४३)

राग—लूहरि सारंग ।

प्रभु जी चन्द जिनंदा म्हें तौ थांका चरनन बंदा ॥ प्रभु जी० ॥ टेक ॥ अनादिकालके देत करम दुख, डारि बंदके फंदा ॥ म्हें तौ० ॥ १ ॥ क्रोध लोभ मद मान हियामैं, कर राख्या है गंदा । ज्ञान ध्यान धन खोसि हमारौ, कर दीना है जिंदा (?) ॥ म्हें तौ० ॥ २ ॥ वारंवार बीनवै वुधजन, करौ करमकौं मंदा । तुम गुन गाऊं और न ध्याऊं, पाऊं शिव सुखकंदा ॥ म्हें तौ० ॥ ३ ॥

(१४४)

चन्द जिन नाथ हमारा, भविनकौं पार उतारा जी ॥ चंद० ॥ टेक ॥ तीन काल परजाय द्रव्य गुन, एक समयमैं जानत सारा ॥ चंद० ॥१॥ इंद नरिंद मुनिंद फनिंदा, सेवत मिलि मिलि सारा । जाकी दुति सम कोटि चंद नहिं, करि लीना निरधारा ॥ चंद० ॥ २ ॥ ऐसा और कोइ नहिं मिलिया, हेरा सब संसारा । वुधजन वंदत पाप निकंदत, तारन तरन निहारा ॥ चंद० ॥ ३ ॥

(१४५)

राग—भैरौं ।

उठौ रे सुज्ञानी जीव, जिनगुन गावौ रे ॥ उठौ० ॥ क ॥ निसि तौ नसाय गई, भानुकौ उद्योत भयौ, ध्या- लगावौ प्यारे, नीदकौं भगावौ रे ॥ उठौ० ॥ १ ॥

भव वन चौरासी वीच, भ्रमतौ फिरत नीच, मोह जाल फंद पर्यौ, जन्म मृत्यु पावौ रे ॥ उठौ० ॥ २ ॥ आरज पृथ्वीमैं आय, उत्तम जनम पाय, श्रावक कुलको लहाय, मुक्ति क्यौं न जावौ रे ॥ उठौ० ॥ ३ ॥ विषयनि राचि राचि, वहु विध पाप सांचि, नरकनि जायके, अनेक दुःख पावौ रे ॥ उठौ० ॥ ४ ॥ परकौ मिलाप त्यागि, आतमके जाप लागि, सुवुधि वतावै गुरु, ज्ञान क्यौं न लावौ रे ॥ उठौ० ॥ ५ ॥

(१४६)

राग–भैरवी ।

यौ करौ उपगार मोपै ॥ यौं० ॥ टेक ॥ अनॅतकालके करम देत दुख, ये नहिं मिटत मिटाये मोपै ॥ यौं० ॥१॥ ज्यावत मारत जा जा गतिमै, ता ता गतिमैं फेरी रोपैं । इन करमनको नाश कियौ तुम, यातैं करत निहोरे तोपैं ॥ यौं० ॥ २ ॥ दीनदयाल कृपा हि करोगे, मोमैं हैं अपराध हि जोपैं । हरौ कर्ममल वुधजनकौ सव, ज्यौं जगभगती जोती ओपै ॥ यौं० ॥ ३ ॥

(१४७)

राग–झिंझौटी ।

निरखि छवी परमेसुरकी कांई, नमिकरि दोष गमा दे जीव ॥ निरखि० ॥ टेक ॥ भ्रमत भ्रमत गति गतिके माहीं, वड़े भाग भए लादे जीव ॥ निरखि० ॥ १ ॥ आन जॅजाल त्यागि मन मेरा, इनके चरन लगा दे जीव ॥ निरखि० ॥ २ ॥ जन्म मरनकी विपति मिटैगी, तोकौं

मोखि मिला दे जीव ॥ निरखि० ॥ ३ ॥ वुधजन सहजैं सुरगति देहैं, वहुरि अनंत सुख द्यावै जीव ॥ निरखि० ॥ ४ ॥

(१४८)

तुम विन जगमैं कौन हमारा ॥ तुम० ॥ टेक ॥ जौलौं स्वारथ तौलौं मेरे, विन स्वारथ नहिं देत सहारा। और न कोई है या जगमैं, तुम ही हौ सवके उपगारा ॥ तुम० ॥ २ ॥ इंद नरिंद फनिंद मिलि सेवत, लखि भवसागर-तारनहारा ॥ तुम० ॥ ३ ॥ भेद विज्ञान होत निज परका, संशय भरम करत निरवारा ॥ तुम० ॥ ४ ॥ अनेक जन्मके पातक नासे, बुधजनके उर हरम अपारा ॥ तुम० ॥ ५ ॥

(१४९)

निसि दिन लख्या कर रे; तन मन वचन थिर रे। ये ज्ञानमइ जिनराजकौं, ज्यौं है सुफल मन रे ॥ निसि० ॥ टेक ॥ ये भवि तेरा धन रे, तोकौं मिले जिन रे। कर पूज चरननकी सदा, सँचि पुन्यका धन रे ॥ निसि० ॥ १ ॥ सुनिकै वचन जिन रे; सरधान धरि उर रे। करि जन्म तेरेका भला, या भली है छिन रे ॥ निसि० ॥ २ ॥ वुधजन कहै सुन रे, सव पापकौं हन रे। अव मिल्या औसर है भला, करि जाप जिन जिन रे ॥ निसि० ॥ ३ ॥

(१५०)

मनुवो लागि रह्यौ जी, मुनिपूजा विन रह्यौ न जाय

॥ मनुवो० ॥ टेक ॥ कोटि वात पिय क्यौं कहौ, हूं मानूं नहिं एक। वोधमती गुरु ना नमूं, याही म्हारै टेक ॥मनुवो० ॥ १ ॥ जन्म मृत्यु सुख दुख विपति, वैरी मीत समान। राग दोष परिग्रहरहित, वे गुरु मेरे जान ॥ मनुवो० ॥२॥ सुर शिवदायक जैन गुरु, जिनकै दया प्रधान । हिंसक भोगी पातकी, कुगतिदाइ गुरु आन ॥ मनुवो० ॥ ३ ॥ खोटी कीनी पीव तुम, मुनिके गल अहि डारि । थे तो नरकां जायस्यो, वे नहिं काढ़ै डारि ॥ मनुवो० ॥ ४ ॥ श्रेणिक सँगतै चेलणा, खायक समकित धार। आप सातमॉ नरक हरि, पहुँचे प्रथममँझार ॥ मनुवो० ॥ ५ ॥ तीर्थंकर पद धारसी, आवत कालमँझार। बुधजन पद वंदन करै, मेरी विपता टार ॥ मनुवो० ॥ ६ ॥

(१५१)

राग-सोरठ।

राग दोष हंकार त्यागकरि शुद्ध भया जी थे तौ ॥ राग० ॥ टेक ॥ तारन तरन सुविरद रावरो, मेरी ओर निहार ॥ राग० ॥ १ ॥ द्रव गुन परजय तीनकालका, लखि लीना विस्तार। धुनि सुनि मुनिवर गनधर कीनै, आगम भवि-हितकार ॥ राग० ॥ २ ॥ जा मति करिकै जा विधि करिकै, उतर गये हौ पार। सो ही बुधजनकौं बुधि दीजे, कीजे, यौ उपगार ॥ राग० ॥ ३ ॥

(१५२)

अदभुत हरष भयौ यौं मनमैं, जिन साहिव दीठे नैननमैं ॥ अदभुत० ॥ टेक ॥ गुन अनन्त मति निपट अल्प

है, क्यौंकरि सो वरनौं वैननमैं ॥ अदभुत० ॥ १ ॥ भरम नस्यौ भास्यौ तत्त्वारथ, ज्यौं निकस्यौ रवि वादर-घनमैं ॥ अदभुत० ॥ २ ॥ ऋद्धि अनादी भूली पाई, वुधजन राजै अति चैननमैं ॥ अदभुत० ॥ ३ ॥

(१५३)

राग-जंगलो।

ओर तो निहारौ दुखिया अति घणौ हो सांइयां ॥ ओर० ॥ टेक ॥ गति च्यारन धारिवो सांइयां, जनम मरनकौ कष्ट अपार; म्हारा साइयां ॥ ओर० ॥ १ ॥ तारण विरद तिहारौ सांइयां, मोहि उतारोगे पार। वुधजन दास तिहारौ सांइयां, कीजे यौ उपगार; म्हारा सांइयां ॥ ओर ॥ २ ॥

(१५४)

तूही तूही याद आवै जगतमैं ॥ तूही० ॥ टेक ॥ तेरे पद पंकज सेवत हैं, इंद नरिंद फनिंद भगतमैं ॥ तूही० ॥ १ ॥ मेरा मन निशिदिन ही राच्या, तेरे गुन रस गान पगतमैं ॥ तूही० ॥ २ ॥ भव अनन्तका पातक नास्या, तुम जिनवर छवि दरस लगतमैं ॥ तूही० ॥ ३ ॥ मात तात परिकर सुत दारा, ये दुखदाई देख भगत मैं ॥ तूही० ॥ ४ ॥ वुधजनके उर आनंद आया, अव तौ हूं नहिं जाऊं कुगतिमैं ॥ तूही० ॥ ५ ॥

(१५५)

राग-दीपचंदी।

म्हारा मनकै लग गई मोहकी गांठि, मैं तौ जिनआगम खोलौं ॥ म्हारा० ॥ टेक ॥ अनादि कालकी घुलि

रही गाठी, ज्ञान छुरीसौं छोलौं ॥ म्हारा० ॥ १ ॥ अष्ट करम ज्ञानावरनादिक, मो आतम ढिग जौलौं । राग दोष विकल्प नहिं त्यागौं, तौलौं भव वन डोलौं ॥ म्हारा० ॥२॥ भेद विज्ञानकी दृष्टि भई तव, परपद नाहिं टटौलौं । विषय कषाय वचन हिंसाका, मुखतैं कवहुं न वोलौं ॥ म्हारा० ॥ ३ ॥ धन्य जथारथवचन जिनेसुर, महिमा वरनौं कौलौं । वुधजन जिनगुनकुसुम गूंथिकैं, विधिकरि कंठमें पोलौं ॥ म्हारा० ॥ ४ ॥

(१५६)

राग—खंमाच झंझौटी ।

पूजन जिन चालो री मिल साथनि ॥ पूजन० ॥ टेक ॥ आज देहाड़ौ है भलौ, आवौ जिन आंगनि ॥ पूजन० ॥ १ ॥ आठौं द्रव्य चहोड़िकैं, कीये गुन भाषनि । अपना कलमख खोय हैं, करि हैं प्रतिपालनि ॥ पूजन० ॥ २ ॥ चित चंचलता मेटिकैं, लागौ प्रभु पॉयनि । सव विधि मनवांछा मिलै, फिरि होहि न चायनि ॥ पूजन० ॥ ३ ॥

(१५७)

रगा—रेखता ।

तिहारी याद होते ही, मुझे अम्रत वरसता है । जिगर तपता मेरा भ्रमसौं, तिसैं समता सरसता है ॥ तिहारी० ॥ १ ॥ दुनीके देव दाने सव, कदम तेरे परसता है । तिहारे [1] दरस देखनको, हजारौं चॅद तरसता है ॥ तिहारी०

जग० [2]

१ आईन । २ हृदय ।

॥ २ ॥ तुम्हींने खूबै भविजनको, वताया भिसेत-रसता है। उसी रसते चले सायर, तुम्हारे वीच वसता है ॥ तिहारी० ॥ ३ ॥ विमुख तुमसों भये जितने, तिते दोजकमें धसता है। मुरीद तेरा सदा वुधजन, आपने हाल मसता है ॥ तिहारी० ॥ ४ ॥

(१५८)

राग-मल्हार।

माई आज महामुनि डोलैं। मतिवंता गुनवंत काहुसौं, वात कछू नहिं खोलैं ॥ माई० ॥ टेक ॥ तू नहिं आई ये घर आये, चरन कमल जल धोलैं ॥ माई० ॥ १ ॥ विधि पड़गाहे असन कराये, निधि वँधि गई अतोलै ॥ माई० ॥ २ ॥ नगर जिमाया कोइ न रहाया, यौं अचरज कहौं कोलै ॥ माई० ॥ ३ ॥ धन्य मुनीसुर धनि ये दानी, वुधजन इम मुख वोलै ॥ माई० ॥ ४ ॥

(१५९)

राग-सोरठ।

हो चेतन जी ज्ञान करौला जी ॥ हो० ॥ टेक ॥ ॥ विनाशी नित्य निरंजन, नेकन डर न धरौला ॥ हो० ॥ १ ॥ देखन जान स्वभाव अनादी, ताहिन ना विसरै राग दोष अज्ञान धारतां, गति गति विपति भरौला ॥ ॥ २ ॥ पूर्व कर्मका वंध हरौला, जो आपमैं धीर करै

१ वहिश्तका रास्ता-स्वर्गका मार्ग। २ नरकमें। ३ शिष्य। ४ व... ५ करोगे।

वुधजन आप जिहाज वैठिकैं, भवदधि—वारि तिरौला ॥ हो० ॥ ३ ॥

(१६०)

हूं तौ निशिदिन सेऊं थांका पाय, म्हारौ दुख भानौ ॥ हूं० ॥ टेक ॥ चौरासीमैं डोलतौ जी, नीठि पहुँच्यौ छौं आय ॥ म्हारौ० ॥ १ ॥ आन देवकौं सेवतां जी, जनम अकारथ जाय ॥ म्हारौ० ॥ २ ॥ मन वच तन वंदन करूं जी, दीजै कर्म मिटाय ॥ म्हारौ० ॥ ३ ॥ वुधजनकी या वीनती जी, सुनिज्यौ श्रीजिनराय ॥ म्हारौ० ॥ ४ ॥

(•१६१)

राग—अडाणौ ।

तुम चरननकी शरन, आय सुख पायौ ॥ तुम० ॥ टेक ॥ अवलौं चिर भव वनमैं डोल्यौ, जन्म जन्म दुख पायौ ॥ तुम० ॥ १ ॥ ऐसो सुख सुरपतिकै नाहीं, सौ मुख जात न गायौ । अव सव सम्पति मो उर आई, आज परमपद लायौ ॥ तुम० ॥ २ ॥ मन वच तनतैं पूजन थे राखौं, कवहुँ न ज्या विसरायौ । वारंवार वीनवै न, कीजै मनको भायौ ॥ तुम० ॥ ३ ॥

(१६२)

ति

राग—टौंगी ।

तपत ाज सुखदाई वधाई, जनमैं चन्दजिनाई ॥ आज० ॥ १ . ॥ महासेन घर चंदपुरीमैं, जाये लछमना माई ॥ हारे ज० ॥ १ ॥ चतुरनिकाय देव देवी मिलि, नाचत गाव-त आई । अव भविजनके पातक टरि हैं, पथ चलि है

शिवदाई ॥ आज० ॥ २ ॥ वड़े भाग वुधजनके आये, सहजैं सब निधि पाई । सब पुरके घर घरमैं मंगल, बाजे बजत सवाई ॥ आज० ॥ ३ ॥

(१६३)

राग—अलहिया बिलावल ।

कृपा तिहारी बिन जिन सइयाँ, कैसैं उधरैंगौं विषयसुख लइयां ॥ कृपा० ॥ टेक ॥ जो कछु भोजन हरत समय-छिन, तन यह विलखि बनै मुरझैंया ॥ कृपा० ॥ १ ॥ पहलैं याकी बान सुधारौ, दिखलावौ तत्त्वार्थ गुसइयां । तब ये जानै उर सरधानै, तजै कुबुद्धि सुबुद्धि गहइयां ॥ कृपा० ॥ २ ॥ बहुत पातकी भवदधि तारे, पतितउधारक सांचे सइयां । बुधजन दास पर्यौ भवदधिमैं, वेगि तारिये गहकर बहियां ॥ कृपा० ॥ ३ ॥

(१६४)

राग—अड़ाणूं ।

चेतन मो—मातौ भव वनमैं, गति गति भरमत डोलै ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ अनत ज्ञान दरसन सुख वीरज, ढांपि दिये रंग होलै ॥ चेतन० ॥ १ ॥ अलप भोगमैं मगन होय है, हित अनहित नहिं तोलै । मनमैं और करत तन ओरै, और हि मुखतैं बोलै ॥ चेतन० ॥ २ ॥ गुरु उपदेश धार ले भाई, तजि विकलप झकझोलै । ह्वै वैरागी निज लौं लागी, सो बुधजन शिवको लै ॥ चेतन० ॥ ३ ॥

(१६५)

राग—सोरठ ।

उमाहौ म्हानैं लागि गयौ छै, मुक्ति मिलनरो ॥ उमा-

हौं० ॥ टेक ॥ अब ही अपूरब आनँद आयौ, जिनदरसन-तैं लाहौ ॥ उमाहौं० ॥ १ ॥ तन कारागृह आशा बेड़ी, सुत तिय साथ उगाहौं । रोग सोग डर त्रास होत नित, सब छूटनकौं चाहौं ॥ उमाहौं० ॥ २ ॥ भव वन सघन कठिन अँधियारौ, जन्म मरनकौ दाहौ । श्रीगुरु शरन मिल्यौ बुधजनकौं, अब संशय रह्यौ काहौ ॥ उमाहौं० ॥ ३ ॥

(०१९६)

राग–विलावल ।

रे मन मूरख बावरे मति ढीलन लावै । जप रे श्रीअरहन्तकौं, यौ औसर जावै ॥ रे मन० ॥ टेक ॥ नर-भव पाना कठिन है, यौं सुरपति चाहै । को जानै गति कालकी, यौं अचानक आवै ॥ रे मन० ॥ १ ॥ छूट गये अब छूटते, जो छूव्या चावै । सब छूटैं या जालतैं, यौं आगम गावै ॥ रे मन० ॥ २ ॥ भोग रोगकौं करत हैं, इन-कौं मत लावै । ममता तजि समता गहौ, बुधजन सुख पावै ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

(०१९७)

राग–झंझौटी ।

नेमिजीके संग चली जाती, जाती री मैं ॥ नेमिजी० ॥ टेक ॥ वा छिन खबर भई नहिं मोकौं, तातैं मैं पछताती; पछताती री मैं ॥ नेमिजी० ॥ १ ॥ यौं जंजाल कुटुंब परि-जन सब, कोइ न मेरे साती; साती री मैं ॥ नेमिजी० ॥ २ ॥ या घर भीतर छिन हू बसिबौ, दावानलसी ताती; ताती

री मैं ॥ नेमिजी० ॥ ३ ॥ एकाकी वनमैं जा बसिकै, ध्याऊंगी दिन राती; राती री मैं ॥ नेमिजी० ॥ ४ ॥ बुधजन गावै सो सुख पावै, या रजमतिकी वाती; बाती री मैं ॥ नेमिजी० ॥ ५ ॥

(१६८)

जिनगुन गाना मेरे मन माना ॥ जिन० ॥ टेक ॥ जिन ध्याया तिन शिवपुर पाया, सुख अनन्तका थाना ॥ जिन० ॥ १ ॥ भरम मिथ्या तिनका छिनमाहीं, निज परमातम आना ॥ जिन० ॥ २ ॥ आन ज्ञानतैं गति गति भटका, जनम मरन दुख पाना ॥ जिन० ॥ ३ ॥ अब बुधजन कहुँ नाहिंन भटकै, चरन शरन मिल जाना ॥ जिन० ॥ ४ ॥

(१६९)

राग—जंगलो ।

मुझे तुम शान्त छबी दरसाया, देखत आनँद आया ॥ मुझे० ॥ टेक ॥ अंदर बाहर परिग्रह नाहीं, नासा दृष्टि लगाया ॥ मुझे० ॥ १ ॥ मैं हेरा संसार समूचा, तोसा निरख न पाया ॥ मुझे० ॥ २ ॥ नाहर सूर बिलाव ऊंदरा, इकठे मिलि बतराया ॥ मुझे० ॥ ३ ॥ तपत हमारी जीव अनादी, सीतल समता पाया ॥ मुझे० ॥ ४ ॥ इंद नरिंद फनिंद मुनिंद मिल, चरन कमल सिर नाया ॥ मुझे० ॥ ५ ॥ धन्य दिवस धनि भाग हमारे, बुधजन तुम गुन । ॥ मुझे० ॥ ६ ॥

(१७०)

राग—झंझोटी। ८

मानुष भव अब पाया रे, कर कारज तेरा ॥ मानुष० ॥ टेक ॥ श्रावकके कुल आया रे, पाया देह भलेरा। चलन सितावी होयगा रे, दिन दोय बसेरा ॥ मानुष० ॥ १ ॥ मेरा मेरा मति कहै रे, कह कौन है तेरा। कष्ट पड़े जब देहपै रे, कोई आत न नेरा ॥ मानुष० ॥ २ ॥ इन्द्रीसुख मति राच रे, मिथ्यातअँधेरा। सात विसन दे त्याग रे, दुख नरक घनेरा ॥ मानुष० ॥ ३ ॥ उरमैं समता धार रे, नहिं साहब चेरा। आपाआप विचार रे, मिटिज्या गति-फेरा ॥ मानुष० ॥ ४ ॥ ये सुध भावन भावै रे, बुधजन तिनकेरा। निस दिन पद वंदन करै रे, वे साहिब मेरा ॥ मानुष० ॥ ५ ॥

(१७१)

राग—जंगलौ।

वीतराग मुनिराजा मोकौं दरस बता जा, दरस बता जा धरम सुना जा ॥ वीतराग० ॥ टेक ॥ परिग्रह रत न नगन छवि थांकी, तारनतरन जिहाजा ॥ वीतराग० ॥ १ ॥ जीवन मरन विपति अर संपति, दुख सुख किंकर राजा। सबमैं समता रमता निजमैं, करत आपनौ काजा ॥ वीत-राग० ॥ २ ॥ तन कारागृह भोग भुजँगसा, परिकर शत्रु समाजा। ऐसी जानि त्याग वन वसिकै, राखत धर्म इलाजा ॥ वीतराग० ॥ ३ ॥ कर्मविनासी मुनि वनवासी,

तीनलोक सिरताजा । आप सारिसा करि बुधजनकौं, तुमकौं मेरी लाजा ॥ वीतराग० ॥ ४ ॥

(१७२)

राग–सोरठ ।

क्यौं रे मन तिरपत है नहिं कोय ॥ क्यौं० ॥ टेक ॥ अनादि कालका विषयन राच्या, अपना सरवस खोय ॥ क्यौं० ॥ १ ॥ नेकु चाखकै फिर न बाहुड़ै, अधिका लपटै जोय । झंपापात लेत पतंग ज्यौं, जलि बलि भस्मी होय ॥ क्यौं० ॥ २ ॥ ज्यौं ज्यौं भोग मिलै त्यौं तृष्णा, अधिकी अधिकी होय । जैसैं घृत डारेतैं पावक, अधिक जरत है सोय ॥ क्यौं० ॥ ३ ॥ नरकनमाहीं भव सागर लौं, दुख भुगतैगो कोय । चाहि भोगकी त्यागौ बुधजन, अविचल शिवसुख होय ॥ क्यौं० ॥ ४ ॥

(१७३)

मूनैं थे तौ तारौ श्रीजिनराज, यौं ही थांकौ जस सुणिजे छै ॥ मूनैं० ॥ टेक ॥ तारन तरन सुभाव रावरो, सब जग जनकै मुख भणिजे छै ॥ मूनैं० ॥ १ ॥ चोर चिँडाल भील वेश्याकौं, त्यार दये अवलौं कहिजे छै । अब औसर मेरा है प्रभु जी, यामैं ढील नहीं कीजे छै ॥ मूनैं० ॥ २ ॥ भव सागरमैं मोह मगर मछ, पकड़ रह्यौ म्हारौ चित छीजे छै । पार उतारौ अब बुधजनकौं, शरनागतकी सुधि लीजे छै ॥ मूंनै० ॥ ३ ॥

(१७४)

अजी मैं तौ हेरया षटमतसार, दया सबमैं सिरै ॥ अजी०

॥ टेक ॥ दुष्ट जीव पर प्रान सतावैं, सो ही नरकनि मांय, जाय विपता भरैं ॥ अजी० ॥ १ ॥ या विन जप तप सव ही झूठे, यौं भाषै जिनराज, सुजन मनमैं धरैं ॥ अजी० ॥ २ ॥ जो सुख दे सो तौं सुख पावै, दुख पावै जो जीव, परकौं दुःख करैं ॥ अजी० ॥ ३ ॥ जो त्रस थावर रक्षा करि हैं, तिनके मन वच काय, पॉय वुधजन परैं ॥अजी० ॥ ४ ॥

(१७५)

आनंद भयौ निरखत मुख जिनचंद ॥ आनंद०॥टेक॥ सव आताप गयौ तखिन ही, उपज्यौ हरष अमंद ॥ आनंद० ॥ १ ॥ भूल थकी रागादिक कीनैं, तव वांधे कमवंद[1] । इनकी कृपातैं अव मिटि जैं हैं, विपताके सव फंद ॥ आनंद० ॥ २ ॥ केवल स्वेत सुभग सुछतापर, वारौं कोटिक चंद । चरन कमल वुधजन उर भीतर, ध्यावै शिव सुखकंद ॥ आनंद० ॥ ३ ॥

(१७६)

राग–कालिंगड़ा ।

जो मोहि मुनिकौं मिलावै, ताकी वलिहारी ॥ जो० ॥ टेक ॥ मिथ्या व्याधि मिटत नहिं उन विन, वे निज अंमृत पावै[2] ॥ ताकी० ॥ १ ॥ इंद नरिंद फनिंद तीनौं मिलि, उन चरना सिर नावै । सव परिहारी परउपगारी, हित उपदेश सुनावै ॥ ताकी० ॥ २ ॥ तजि सव विकलप निज

---

१ कर्मवध । २ पिलावैं ।

पद्माहीं, निसिदिन ध्यान लगावै। जन्म सुफल वुधजन तव व्हे है, जव छवि नैन लखावै ॥ ताकी० ॥ ३ ॥

(१७७)

भई आज वधाई, निरखत श्रीजिनराई॥ भई० ॥टेक॥ गया असंगल पाया मंगल, जन्म सुफल भया भाई॥ भई० ॥ १ ॥ तीनलोककी सारी सम्पति, अर सारी ठकुराई। इनकी कृपा कटाछ होत ही, मेरी मुझमैं पाई ॥ भई० ॥ २ ॥ इन विन राचे भोग विसनमैं, तातैं विपदा लाई। अव भ्रम नास्या ज्ञान प्रकास्या, पिछली वुध विसराई ॥ भई० ॥ ३ ॥ सवहितकारी परउपगारी, गनधर वानि वताई। वुधजन अनुभव करके देखी, सांची सरधा आई ॥ भई० ॥ ४ ॥

(१७८)

भये आज अनंदा, जनमैं चंद्रजिनंदा ॥ भये० ॥टेक॥ चतुर-निकाय देव मिलि आये, इन्द्र भया है वंदा॥ भये० ॥ १ ॥ महासेन घर मात लछमना, उपजाया सुख कंदा। जाके तनमैं वड़ी जोति अति, मलिन लगै है चंदा॥ भये० ॥ २ ॥ अव भविजन मिलि सुख पावैंगे, कटिहैं कर्मके फंदा। याहीके उपदेश जगतमैं, होगा ज्ञान असंदा॥ भये० ॥ ३ ॥ धन्य घरी धनि भाग हमारा, दूर भया दुख दंदा। वुधजन वारवार इम भाषै, चिरजीवौ यह नंदा ॥ ये० ॥ ४ ॥

(१८९)

राग–ईमन कल्यान चौतालो ।

तू पहिचान रे मन, निज स्वरूप ज्ञायक अनूप परमभू-प गुनका निधान ॥ टेक ॥ सुरलोक नरलोक नागलोक, लोकालोक विलोक सुजान ॥ तू पहिचान० ॥ १ ॥ विधि-वश हो भरमत अनादि जग, धारत जन्म मरन दुख जान॥ १सुधनय सुध है शिवमैं विराजै, जैसौ बुधजन करत बखान ॥ तू पहिचान० ॥ २ ॥

(१८०)

राग–काफी, ताल–दीपचंदी ।

चेतन तोसौं आज होरी खेलौंगी रे ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ अनँत दिवस क्यौं अंनतहि डोल्यौं, ताकौं बदला अब ल्यौंगी रे ॥ चेतन० ॥ १ ॥ जो तैं करी सो भंडुवा गवा-ऊं, संजमतैं कर बाँधौंगी रे । त्रास परीषह लौंगी तेरै, तब सुधताई आवैंगी रे ॥ चेतन० ॥ २ ॥ जिन तोकौं दुख दै भरमायौं, ता दुरमतिकौं भगावौंगी रे । खोटे भेष धरे लंगर तैं, अब शुभ भेष बना द्यौंगी रे ॥ चेतन० ॥३॥ समकित दरस गुलाल लगाऊं, ज्ञान सुधारस छिरकौंगी रे। चारित चोवा चरचौं सब तन, दया मिठाई खवावौंगी रे चेतन० ॥४॥ बुधजन यौं तन सफल करौंगी, विधि-विपदा सब चूरौंगी रे । हिल मिल रहुँ विछुरौं नाहिं कबहूं, मनकी आशा पूरौंगी रे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥

---

१ शुद्ध निश्चयनयसे । २ अन्यस्थानोंमें ।

(१८१)

राग—कनड़ी।

श्रीजिनवर दरवार खेलूंगी होरी॥ श्री जिन०॥ टेक॥
पर विभावका भेष उतारूं, शुद्ध सरूप वनाय, खेलूंगी होरी॥ श्रीजिन०॥ १॥ कुमति नारिकौं संग न राखूं, सुमति नारि बुलवाय, खेलूंगी होरी॥ श्रीजिन०॥ २॥ मिथ्या भसमी दूर भगाऊं, समकित रंग चुवाय, खेलूंगी होरी॥ श्रीजिन०॥ ३॥ निज रस छाक छक्यौ वुधजन अव, आनँद हरष वढ़ाय, खेलूंगी होरी॥ श्रीजिन०॥ ४॥

(१८२)

राग—कनड़ी।

होजी म्हांरी याही मानूं काई मानूंजी प्रभूजी, ॥ होजी०॥ टेक॥ भव भवमैं तुम दरसन पाऊं, सुपनैं और नहीं जानूं॥ होजी०॥ १॥ काल अनादि गयौ भटकत ही, अव तौ करमनकौं भानूं। तुम विन मेरी कहौ कहुं कासौं, वुधजन मांगै शिवथानूं॥ होजी०॥ २॥

(१८३)

राग—कनड़ी। (पंजावी)

मग वतलाना मानूं[1] मोखिदा[2] हो साइंयां॥ मग०॥ टेक॥ तैंडे चरन दानिवे, इक सरना मेरे ताईं, ओरतैं नाहिं पुकारना, हो साइंयां॥ मग०॥ १॥ भवदधि भारीतैं तूहि उतर्या मेरे सांई, मैंनूं भी पार उतारना, हो साइंयां॥ मग०॥ २॥ वुधजन चेराकौं विधि जकर्या दुखदाई, हाथ पकरिकैं उवारना, हो साइंयां॥ मग०॥ ३॥

१ मुझको। २ मोक्षका।

(१८४)

राग-भैरों।

पूजत जिनराज आज, आपदा हरी। दरस्यौ तत्त्वार्थ मोहि धन्य या घरी ॥ पूजत० ॥ टेक ॥ छल वल मद क्रोध मेरी, ऊंचता करी। अव लौं या जानत सों, वात निरवरी ॥ पूजत० ॥ १ ॥ राजपदी छोरिकैं, विरागता धरी। तासौं जिनराज भये, दृष्टि या परी ॥ पूजत० ॥२॥ आन भाव जन्म जन्म, कीन वहु वरी। यातैं गति चार वीच, विपति अति भरी ॥ पूजत० ॥ ३ ॥ वुधजन जिन शरन गह्यौ, मिट गई मरी। आपमाहिं आप लख्यौ, शुद्ध आपरी ॥ पूजत० ॥ ४ ॥

(१८५)

राग-भैरवी।

तैं तौ गुरु सीख न मानी, न मानी रे मोरे जिया; फिर विषयनिसौं रति मानी ॥ तैं० ॥ टेक ॥ इनहीके कारन चहुँगति, डोल्यौं रे भाई। सुन ताकी कौलग कहूं कहानी ॥ तैं तौ० ॥ १ ॥ गई सो गई अव वुधजन समझौ रे भाई, तू तौ करिलै जिनमत उर सरधानी ॥ तैं तौ० ॥ २ ॥

(१८६)

राग-झिझोटी।

सजनी मिलि चालौं ये पूजनकाज ॥ सजनी० ॥ टेक ॥ समोसरन वन आय विराजे, वीरनाथ महाराज ॥ सजनी० ॥ १ ॥ सखियन संग चेलना रानी, भगत करै मनलाय। वे प्रभु दीनदयाल जगतके, हितकर धर्म-जिहाज ॥ सजनी० ॥ २ ॥

(१८७)

राग—ललित, एकतालो ।

कहाजी कियौ भव धरिकैं रे वाह वाहोजी तुम॥ कहा० ॥ टेक ॥ नरभव श्रीजिनवरमत पायौ, लख चौरासी फिरिकैं; रे वाह वाहो ॥ कहा० ॥ १ ॥ परद्रव्यनितैं रीझत खीजत, या कुटिलाई करिकैं । भटके हो अति भटकौगे पुनि, जन्म मरन दुख भरिकैं, रे वाह वाहो ॥ कहा० ॥ २ ॥ अब सुख दुखमैं बूड़त हौ क्यौं, तनमैं आप विसरिकैं । करि पुरुषारथ शिवपुर चालौ, बुधजन भवदधि तरिकैं, रे वाह वाहो ॥ कहा० ॥ ३ ॥

(१८८)

राग—ललित एकतालो ।

हमारी पीर तौ हरौ जी, अजी, यौं सुनियौं जी सेवक ओर चितइयौं ॥ हमारी० ॥ टेक ॥ हम जगवासी तुम जगनायक, इतनी रीति निवहियौ ॥ हमारी० ॥ १ ॥ ज्ञान आपना भूलि रहे हैं, मोह नींद वश गइयाँ । कर्म चोर मिलि हमकौं लूटत, करुना धारि जगइयौं जी ॥ हमारी० ॥ २ ॥ दुखी अनादि काल भव भरमत, जिन तुम दर्शन लइयाँ । अब फिरना हरि शरना दीजे, बुधजन सीस नमइयौं जी ॥ हमारी० ॥ ३ ॥

(१८९)

राग—ललित एकतालो ।

बधाई भई है महावीर, हो जी म्हारै, नैंनन लखि हरष ॥ बधाई० ॥ टेक ॥ बनि आई सब मौज री, मुख

कहिय न जाय। हो जी म्हारै विछुरत वनि नहिं आय ॥ वधाई० ॥ १ ॥ दुख खोयौ सव जनमकौ, आनंद वढ़ाय। हो जी मैं तो शुभ विधि पूजौं पाय ॥ वधाई० ॥ २ ॥

(१९०)

राग-अलहिया जल्द तितालो।

सुण तौ मांहींवाला, क्यौंजी क्यौंजी क्यौंजी जिया रिंदगी(?) ॥ सुण० ॥ टेक ॥ प्रभु न विसरि जाना वे रचिया विपयनसों। करन सला जिन वंदगी हो ॥ सुण० ॥ १ ॥ देहमैं मगन सदा वै भुलानी, आतमनूं देह भरी सारी गंदगी हो ॥ सुण० ॥ २ ॥ रहना भला तैनूं वे, जिनदे चरन तटवे, ऐसानूं वनैं विधि चंदगी हो ॥ सुण० ॥ ३ ॥

(०१९१)

राग-विलावल कनड़ी तेतालो।

अष्ट कर्म म्हांरौ कांई करसी जी, हूं म्हारै ही घर राखूं राम ॥ अष्ट० ॥ टेक ॥ इन्द्री द्वारै चित दौरत है, सो वशकै नहिं करस्यूं काम ॥ अष्ट० ॥ १ ॥ इनका जोर इताही मुझपै, दुख दिखलावैं इन्द्रीग्राम। जाकूं जानूं मैं नहिं मानूं, भेदविज्ञान करूं विसराम ॥ अष्ट० ॥ २ ॥ कहूं राग कहुं दोप करत थौ, तव विधि आते मेरे धाम। सो विभाव नहिं धारूं कवहूं, शुद्ध सुभाव रहूं अभिराम ॥ अष्ट० ॥ ३ ॥ जिनवर मुनिगुरुकी वलि जाऊं, जिन वत-

---

१ मध्यवाला—अन्तरात्मा।

लाया मेरा ठाम । सुखी रहत हूं दुख नहिं व्यापत, बुधजन हरषत आठौं जाम ॥ अष्ट० ॥ ४ ॥

(१९२)

राग—अलहिया विलावल ।

वानी जिनकी बखानी, हो जी, थांनैं सव मुनि मनमैं आनी ॥ वानी० ॥ टेक ॥ मिथ्याभानी सम्यकदानी, म्हारा घटमैं वसौ हितदानी ॥ वानी० ॥ १ ॥ निश्चय व्योहार जितावनहारी, नय निक्षेप प्रमानी । तुम जानें विन भव-वन भटक्यौ, करौ कृपा सुखदानी ॥ वानी० ॥ २ ॥ जिते तिरे भवि भवदधिसेती, तिन निश्चय उर आनी । अवहूं तिरिहै वुधजन तुमतैं, अंकित स्यादनिशानी ॥ वानी० ॥ ३ ॥

(१९३)

राग—धनासरी ।

थारी थारी चेतन मति भोरी रे, तैं तौ अपनी आप हि वोरी रे ॥ थारी० ॥ टेक ॥ सिर डारै मोह ठगौरी रे, सँग राग दोष दो [1]थोरी रे । तू रचि रह्यौ इनतैं सौंरी रे, ये करत कहा तोसौं जोरी रे ॥ थारी० ॥ १ ॥ क्रोधादिक भाव वनावै रे, तातैं जन्म मरण दुख पावै रे । यौ औ-सर गुरु समझावै रे, जो मानैं तौ वचि जावै रे ॥ थारी० ॥ २ ॥ द्रव थान काल ले आया रे, भावी न अन्यथा थाया रे । जो वुधजन धीरज लाया रे, सो अविचल सुखकौ पाया रे ॥ थारी० ॥ ३ ॥

---

१ दुष्ट ।

(१९४)

थे चिंतचाहीदा नजरूं आया ॥ थे० ॥ टेक ॥ निशि-दिन ध्यावां नीवे मंगल गावां हरषावां चरनन पूज रचाया ॥ थे० ॥ १ ॥ अत्र नहिं विसरूं जी वे ये वर दीजे सुन लीजे वुधजन सरना पाया ॥ थे० ॥ २ ॥

(१९५)

राग—ईमन जल्द तितालो।

शरन गही मैं तेरी, जगजीवन जिनराज जगतपति ॥ शर० ॥ टेक ॥ तारन तरन करन पावन जग, हरन करम भव-फेरी ॥ शरन० ॥ १ ॥ ढूंढ़त फिर्‌यौ भर्‌यौ नाना दुख, कहुँ न मिली सुखसेरी । यातैं तजी आनकी सेवा, सेव रावरी हेरी ॥ शरन० ॥ २ ॥ परमैं मगन विसार्‌यौ आतम, धर्‌यौ भरम जगकेरी । ये मति तजूं भजूं परमातम, सो वुधि कीजे मेरी ॥ शरन० ॥ ३ ॥

(१९६)

कर[2]मूंदा कुपेंच मेरै है दुख दाइयां हो ॥ करमूंदा० ॥ टेक ॥ करमहरन महिमा सुनि आयौ, सुनिये [3]मैंड़ी साइयां हो ॥ करमूंदा० ॥ १ ॥ कवहुंक इंद नरिंद वनायौ, कवहुंक रंक वनाइंयां । कवहुंक कीट गयंद रचायौ, ऐसैं नाच नचाइयां ॥ करमूंदा० ॥ २ ॥ जो कुछ भई सो तुमही जानौं, मैं जानत हूं नाइयां । कर्मवंध तुम काटे जाविधि, सो विधि मोहि दिवाइयां ॥ करमूंदा० ॥ ३ ॥

---

१ चित्त जिनको चाहता था, ऐसे आप दिखलाई दिये । २ कर्मोंका । ३ मेरी ।

(१९७)

राग–ईमन धीमो तेतालो।

तुम सुध आयैं मोरै आनँदकी उठत हियरा चाह हां ॥ तुम० ॥ टेक ॥ तेरे नामके जापका, फल आगमं लेखा। सिंह स्याल वानर तरे, कहुं कोलौं विसेखा ॥ तुम० ॥ १ ॥ अपने जियके काजका, कोई नाहीं देख्या। तुम ही हो प्रभु एकले, मैं सब विधि पेख्या ॥ तुम० ॥ २ ॥

(१९८)

राग–वरवा।

अब तेरी सुनि वातड़ी, चुप रहौ रे जिया, धंधा रे करता ॥अव० ॥टेक॥ काल अनन्त निगोदमैं, भरम्या इम भाई। अष्टादश भव सांसमैं, धारे दुखदाई ॥ अव० ॥ १ ॥ पुनि विकलत्रय ऊपज्या, पुनि हुआ असैनी। अव सैनी मानुष भया, पाया कुल जैनी ॥ अव० ॥ २ ॥ अशुभ कियैं है नारकी, नाना दुख पावै। शुभतैं सुरगन सुख लहै, आगम इम गावै ॥ अव० ॥ ३ ॥ दोउ शुभाशुभ त्यागिकैं, अपना पद ध्यावै। बुधजन तब थिरता लहै, फिर जन्म न पावै ॥ अव० ॥ ४ ॥

(१९९)

राग–सिंधड़ा।

तू तौ है ज्ञानमैं नाहीं तन धनमैं ॥ तू० ॥ टेक ॥ सपरस गंध वरन रस रूपी, जानपनौं नहिं इनमैं ॥ तू० ॥१॥ पर–परनति परनति करवेतैं, भ्रमत फिरत है गतिन– ॥ तू० ॥ २ ॥ विन आवरन स्वच्छ जब ह्वै है. तव

तोमैं तू इनमैं ॥ तू० ॥ ३ ॥ बुधजन जानपनौ ही अपनौ, तज ममता जन जनमैं ॥ तू० ॥ ४ ॥

(२००)

राग-सिंधड़ा ।

हो चेतन अभी चेत लै, मर जानेकी गम क्या ॥ हो० ॥ टेक ॥ मानुष ह्वै गाफिल नहिं रहना, आपा आप पिछान लै ॥ हो० ॥ १ ॥ सिरंडा[1] हो विषयनसौं लपटा, दुख पावैगा जान दै । आगैं भवमैं क्या तू करैगा, ताका जतन विचारि लै ॥ हो० ॥ २ ॥ जिनवरकी वानी उर धारौ, मिथ्या मोह निवारि लै । बुधजन अपना परका भला करि, समता सुखकर धारि लै ॥ हो० ॥ ३ ॥

(२०१)

बूड़्यौ रे भोळा जीव, मूरख बूड़्यौ रे ॥ बूड़्यौ रे० ॥ टेक ॥ जिनधर्मामृत छोड़िकैं रे, पीवत जहर मिथ्यात । आन देव पूजत फिर्‌यौ, सुन्यौ कुगुरुकी वात ॥ बूड़्यौ रे० ॥ १ ॥ पेट भरनके कारनैं रे, करौ अनीति अज्ञान । चोरी चुगली झूठी वकिकैं, हरै हरखिकैं प्रान ॥ बूड़्यौ० ॥ २ ॥ अरुचि हियामैं धार लै रे, भोग भुजंग समान । बुधजन आतम परखि ल्यो, करि करि भेदविज्ञान ॥ बूड़्यौ० ॥ ३ ॥

(२०२)

राग-सिंधड़ा ।

चेतन आयु थोरी रे, भोगमैं क्यौं भुलायौ रे । विषयमैं

---

[1] पागल ।

क्यौं लुभायौ रे, तू तौ उलझत है जंजाल ॥ चेतन० ॥ टेक ॥ मनुष जनममैं आयबौ रे, सुलभ जगतमैं नाहिं । गयौ न मोती पायसी रे, सागरका जलमाहिं ॥ चेतन० ॥ १ ॥ राज विभौ जोवन तन सुंदर, रानी जुतसिंगार । जल बुद्वद दामिनिका चमका, विनसत होत न वार ॥ चेतन० ॥२॥ नैन पतंग मतंग फरसतैं, मृग श्रवना आधार । अलि नासा सफरी रसनातैं, प्रान तजत निरधार ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ पराधीन ये निश्चल नाहीं, आखिर होत गिलान । सेवनका फल नरक मिलत है, त्यागेतैं निरवान ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ बुरी भली दोऊ कह दीनी, कर लै आप पिछान । ऐसा कारज करिये बुधजन, जामैं सदा कल्यान ॥ चेतन० ॥ ५ ॥

(२०३)

राग–झंझौटी ।

अनी (?) मेरा नाभिनंदन जगवंदन स्वामी, पूजन काज चलै ॥ अनी० ॥ टेक ॥ मिलि साधरमी चलौ देहरै[1], उत्तम दरव सु लै ॥ अनी० ॥ १ ॥ करि पूजा प्रभुका गुन गावैं, निहचल होय भलै ॥ अनी० ॥ २ ॥ भव भवमैं बुधजन सुख लै है, अनुक्रम मुक्ति मिलै ॥ अनी० ॥ ३

(२०४)

राग–जंगलो ।

या काया माया थिर न रहैगी, झूठा मान न कर रे ॥

---

1 मन्दिरको ।

या० ॥ टेक ॥ खाई कोट ऊंचा दरवाजा, तोप सुभटका भैर रे। छिनमैं खोसि मुदी (?) लै तव ही, रंक फिरै घर घर रे॥ या०॥ तन सुंदर रूपी जोवनजुत, लाख सुभटका वल रे। सीत-जुरी जव आन सतावै, तव कांपै थर थर रे॥ या०॥ २॥ जैसा उदय तैसा फल पावै, जाननहार तू नर रे। मनमैं राग दोष मति धारै, जनम मरनतैं डर रे॥ या०॥ ३॥ कही वात सरधा कर भाई!, अपने परतँख लख रे। शुद्ध सुभाव आपना वुधजन, मिथ्याभ्रम परिहर रे॥ या०॥ ४॥

(२०५)

येती तौ विचारौ जगमैं पावेनां है, हे जिया॥ येती० ॥ टेक॥ पाई नरदेह मति भूलै म्हारा हे जिया॥ येती०॥ १॥ लख चौरासीकै माहिं तू फिरैलो वावरा। जनम मरण दुख होय, म्हारा हे जिया॥ येती०॥ २॥ तेरा साहिव तुझहीमाहिं विराजै जीयरा। वुधजन क्यौं रह्या भूल, म्हारा हे जिया॥ येती०॥ ३॥

(२०६)

अव तौ या जोग नाहीं रे, अरे हो अजान॥ अव०॥ टेक॥ सिरपर काल फिरत नहिं दीसै, चेत वुढ़ापा आई रे॥ अव०॥ १॥ कोड़ि मुहर दीयां नहि जीवौ, हेलौ पाड़ि सुनाई रे॥ अव०॥ २॥ धरम विना नरभव तू खोवत, ज्यौं आंधे निधि पाई रे॥ अव०॥ ३॥

---

१ समूह। २ शीत-ज्वर। ३ प्र[illegible]। ४ पाहुंना-महमान। ५ चिल्लाकरके।

त्यागि मिथ्यात धारि समकितकौं, बुधजन है सुखदाई रे ॥ अव० ॥ ४ ॥

(२०७)

राग—खंमाच ।

जमारा[1] नी वे तेरा नाहक वीता ॥ जमारा० ॥ टेक ॥ या तौ थारी कुमतिड़ल्या[2] दुख दीता भलां दुख दीता ॥ जमारा० ॥ १ ॥ धरम विसारि विषय सुख सेवत, अंमृत तजि विष लीता ॥ जमारा० ॥ २ ॥ आन देव सेया तजि जिनकौं, रह्या रीतेका रीता ॥ जमारा० ॥ ३ ॥ अब बुधजन संवरकौं पकरौ, तासौं रहौगे नचीता ॥ जमारा० ॥ ४ ॥

(२०८)

राग—खंमाच ।

हो जिय ज्ञानी रे ये ही सुणि जइयौ रे ॥ हो० ॥ टेक ॥ भ्रमतौ आयौ नरभवमाहीं, विछुरत वार न लइयौ रे ॥ हो० ॥ १ ॥ जो चेतै तौ ही सुख पावै, विन चेतैं दुख पइयौ रे ॥ हो० ॥ २ ॥ हित करिकै बुधजन भाषत है, जिनसरधान करइयौ रे ॥ हो० ॥ ३ ॥

(२०९)

राग—खंमाच ।

गातां ध्यातां तारसी जी भरोसौ महावीरकौ ॥ गातां० ॥ टेक ॥ हेरि थक्यौ सबमाहीं ऐसौ, नाहीं कोऊ पीरकौ ॥ गातां० ॥ १ ॥ जे तिर गये ते इनके जपतैं, मेटि कर्‌

१ जीवनसमय । २ कुमतिने ।

भव भीरको । बुधजन समता ल्यो पावौगे, शिवपुर भव-दधितीरको ॥ गातां० ॥ २ ॥

(२१०)

राग—खंमाच ।

यौंही थाँनै ओलँवो, हो जिय ज्ञानी ॥ यौं ही० ॥ टेक ॥ रतन मनुपभव पाय कठिनतैं, सो नाहक क्यौं खोयवौ ॥ यौं ही० ॥ १ ॥ प्रभु विसारि पर—कंचन—कामिनि, उर चितवत क्यौं चोरिवौ ॥ यौं ही० ॥ २ ॥ आपा आप सम्हारौ बुधजन, फेरि न औसर पायवौ ॥ यौं ही० ॥३॥

(२११)

राग—खंमाच ।

पारै छै पारै छै दिन पारै छै, विधि मोकौं दिन पारै छै ॥ पारै० ॥ टेक ॥ ऊरध मध्य पताल लोकमैं, फेरै छिन छिन सारै छै । मिश्र गृहीत अगृहीत प्रमाणो, ग्रहण करत उरझारै छै ॥ पारै० ॥ १ ॥ केते कल्प गये तुम जानों, ल्यावै छै अर मारै छै । जघन मध्य उत्कृष्ट आयु करि, गति गतिमाहीं डारै छै ॥ पारै० ॥ २ ॥ अध्यवसाय जोगके सोई, सबै भाव विस्तारै छै । बुधजन चरन शरन दिढ़ पकरी, दुख हरिवौ थां—सारै छै ॥ पारै० ॥ ३ ॥

(२१२)

राग—खंमाच ।

मानै छै मानै छै यौं ही मानै छै, मुरडांट जी मूरख मानै छै ॥ मानै० ॥ टेक ॥ जीव अरूपी रूपी तनकौं,

आपनपो करि जानै छै ॥ मानै० ॥ १ ॥ आप अकरता थाप हियामैं, पाप करत नहिं छानै छै। अशुभ तजत है शुभ आदरिकै, शुद्ध भाव नहिं आनै छै ॥ मानै० ॥ २ ॥ द्रव्य अभेदमैं भेद कल्पकै, अजथा रीति वखानै छै। भेद अभेदी एक अनेकी, बुधजन दोऊ ठानै छै ॥ मानै० ॥३॥

(२१३)

राग—सिद्धकी खंमाच तेतालो।

मुजनूं जिन दीठा प्यारा वे, ध्यान लगाय उरमाहिं निहारा ॥मुजनूं० ॥ टेक॥ और सकल स्वारथके साथी, विन स्वारथ ये म्हारा ॥ मुजनूं० ॥ १ ॥ आन देव परिगृहके धारी, ये परिगृहतैं न्यारा॥ मुजनूं० ॥२॥ सकल जगत जन राग वढ़ावत, ये प्रभु राग निवारा ॥ मुजनूं० ॥ ३ ॥ चरन शरन जॉचत है बुधजन, जव लौं ह्वै निरवारा॥ मुजनूं०॥४॥

(२१४)

जीवा जी थाँनै किण विधि राखां समझाय, हो जी म्हारा हो जी ॥ जीवा जी० ॥ टेक ॥ घणां दिनांका विगड्या तीवण, कुमति रही लपटाय ॥ जीवा जी० ॥ १ ॥ यातौ थानैं पर घर राखै, लालच विसन लगाय । मोर्मंदिरातैं किया बावला, दीना रतन गमाय॥ जीवा जी० ॥ ॥ २ ॥ एक स्याँत मुझरूप निहारौ, निज घरमाहीं आय। बुधजन अविचल सुख पावौगे, सब संकट मिट जाय। ॥ जीवा जी० ॥ ३ ॥

---

१ मुझको। २ दिखा। ३ शाक। ४ मोहरूपी शराबसे। ५ छनभर।

(२१५)

राग-परज ।

करि करि कर्म इलाज, जीवाजी हो ल्यो नै सुहेलौ सुख मोखरौ ॥ करि० ॥ टेक ॥ विधि दुष्टन सँग जगतमैं, पावत हौ संताप । तीनलोककी प्रभुता लायक, रंक भये क्यौं आप ॥ करि० ॥ १ ॥ निज स्वभावमैं लीन होयकैं, राग-रु-दोष मिटाय । बुधजन विलँब न कीजिये हो, फेर न या परजाय ॥ करि० ॥ २ ॥

(२१६)

राग-अडाणों ।

गहो नी धर्म, नित आयु घटै जी ॥ गहो० ॥ टेक ॥ या भव सुख परभव सुख ह्वै है, पूर्व कमाये कर्म कटै जी ॥ गहो० ॥ १ ॥ तन तेरेकी रीति निरखि लै, पोषत पोषत जोर हटै जी । मात तात सुत झूठे जगके, जम टेरै तव नाहिं नँटै जी ॥ गहो० ॥ २ ॥ लाभ जतनमैं दिन मति खोवै, मिलि है जो तेरे लेख पटै जी । बुधजन जतन विचारौ ऐसा, जासौं अगली विपति मिटै जी ॥ गहो० ॥ ३ ॥

(२१७)

यौ मन मेरौ निपट हठीलौ ॥ यौ० ॥ टेक ॥ कहा करूं वरज्यौ न रहत है, दौरि उठत जैसैं सर्प उकीलौ ॥ यौ० ॥ १ ॥ वारंवार सिखावत श्रीगुरु, यौ नहिं मानत गज गरवीलौ । दुख पावत तौहू नहिं ध्यावत, बुधजन निजपद अचल नवीलौ ॥ यौ० ॥ २ ॥

---

१ लो न सहज सुख मोक्षका ? २ गहो न-ग्रहण कर लो न ? । ३ इकार नहीं करता है । ४ बिना कीला हुआ । ५ नवीन ।

(२१८)

राग–सोरठ।

मिनेखगति निठैं मिली छै आय ॥ मिनख० ॥ टेक ॥ काकताल किधौं अंधवटेरी, उपमा कौन बनाय ॥ मिनख० ॥ १ ॥ पूरन विपति नरकगतिमाहीं, ज्ञान पशू नहिं पाय। देव ऊंचपदहूमैं जांचै, कधि उपजौं नर आय ॥ मिनख० ॥ २ ॥ यह गति दान–महातपकारन, अजरअमरपद-दाय। सो ही भोग व्यसनमै खोवै, अँमृत तजि विष पाय ॥ मिनख० ॥ ३ ॥ जल अंजुलि ज्यौं आयु घटत है, करि-लै वेगि उपाय। बुधजन वारंवार कहत है, शठसौं नाहिं वसाय ॥ मिनख० ॥ ४ ॥

(२१९)

राग–सोरठ।

प्रभु थांका वचनमैं वहुत वनै छै रूड़ी ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ अशुभ भाव सहजैं मिटि जै हैं, मिटि जै हैं सब ही गति कूँड़ी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ विषय मगन जिन वचन अँपूठे, तिनकी सब विधितैं मति बूड़ी। सरधा करि मुनि वचन्न सुनत ही, सुख पायौ निंदक हू चूँड़ी ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ दया दान भवि बैंलध्या जोतै, संवर तप हल धारै जूँड़ी। धर्म खेतमैं मोक्ष धान लै, सहज मिलै विधि सुरगति तूँड़ी ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

---

१ मनुष्यगति। २ कठिनाईसे। ३ सुन्दरता। ४ खोटी। ५ उलटे। ६ चाडालिनीने। ७ बैल। ८ जूंआ। ९ तुष–पंयाल।

(२२०)

निज कारज क्यौं न कियौ अरे हे जिया तैं, निज० देख्यौ थारौ यौ नसीव हे जिया तैं ॥ निज० ॥ टेक ॥ या भवकौं सुरपति अति तरसैं, सहजै पाय लियौ ॥ निज० ॥१॥ मिथ्या जहर कह्यौ गुरु तजिवौ, तैं अपनाय पियौ । दया दान पूजन संजममैं, कवहूं चित न दियौ ॥ निज० ॥ २ ॥ बुधजन औसर कठिन मिल्यौ है, निश्चय धारि हियौ । अव जिन-मत सरधा दिढ़ पकरौ, तव है सफल जियौ ॥ निज० ॥३॥

(२२१)

तेरौ आवत नीड़ो[1] काल, वरज्यौ ना रहै ॥ तेरौ०॥टेक॥ जोवन गयौ बुढ़ापौ आयौ, ढीली पड़ गई खाल, वरज्यौ ना रहै ॥ तेरौ० ॥ १ ॥ घरी घरी कर वीतत वेरसैं[2], करि है सव पैमाल, वरज्यौ ना रहै ॥ तेरौ० ॥ २ ॥ भोग व्यसनमैं दिन मत खोवै, वूड़ैगौ जग जाल ॥ तेरौ० ॥ ३ ॥ परकौं त्यागि लागि शुभ मारग, बुधजन आप सम्हाल, वरज्यौ ना रहै ॥ तेरो० ॥ ४ ॥

(२२२)

समझ भव्य अव मति सोवै रे, उठ रे सोवत जनम गयौ तोकौं ॥ समझ० ॥ टेक ॥ काय कुटी तौ टूटि गई है, क्यौं नहिं जोवै रे । कुंजर काल गहै तव तेरा, क्या वश होवै रे ॥ समझ० ॥ १ ॥ अनंत काल थावर त्रस जीवा-माहीं खोवै रे । अव पुरुषारथ करिवेकौ दिन, सो क्यौं

---

१ निकट—नजदीक । २ वर्ष—सालें ।

गोवै रे ॥ समझ० ॥ २ ॥ नरभव रतन पाय नहिं समझै, सो दधि[1] वोवै रे। निज-सुभाव-सुध-वारि करममल, बुधजन धोवै रे ॥ समझ० ॥ ३ ॥

(२२३)

राग-सोरठ।

आज लग्यौ छै उमाहौ यौ मनमैं, संग बुरौ करमनकौ हरैस्यां[2] ॥ आज० ॥ टेक ॥ तीनलोकपति वंदत जाकौं, तिनके पद-पंकज-रज परस्यां[3] ॥ आज० ॥ १ ॥ सुनि जिन-वानी वात पिछानी, संशय मोह भरम परिहरैस्यां[4] ॥ आज० ॥ २ ॥ पर-सॅग त्यागि पाय निज सम्पति, बुधजन सुखसौं शिवतिय वरस्यौं[5] ॥ आज० ॥ ३ ॥

(२२४)

हे देखो भोळौ वरज्यौं न मानै, यौ जीव विषयांरो[6] मातौ ॥ देखो० ॥ टेक ॥ परम दयाल सिखावत हितकौं, यौं विपरीति पिछानै ॥ हे० ॥ १ ॥ परघर गमन करत निशि वासर, अपनी वुधि नहिं जानै। दुखी भयौ खोयौ सव जिनतैं, तिनहीसौं रति आनै ॥ हे० ॥ २ ॥ भाग अ-पूरव उदय भये तव, भैंटे श्रीजिन थाँनै[7] । तुम सरधान धारि उर बुधजन, पासी[8] शिवसुख-थानै ॥ हे० ॥ ३ ॥

(२२५)

हो देवाधिदेव म्हारी, अरज सुनौ जी ॥ हो० ॥ टेक ॥ नरकनका दुःख कहौ, कौलौ भनौं जी। एकलेकैं

---

१ उदधि-समुद्रमें। २ हरूंगा-नष्ट करूंगा। ३ स्पर्श करुगा। ४ परिहरण करूंगा, नष्ट करूंगा। ५ वरण करूंगा-व्याहूंगा। ६ विषयोका उन्मत। ७ [illegible]। ८ पावैगा।

मार दई, लाख जनौं जी ॥ हो० ॥१॥ थावर विकलत्रय, पंचेन्द्री त्रनौ जी । शीत घाम भूख प्यास, त्रास घनौं जी ॥ हो० ॥ २ ॥ सागरलौं सुरगतिमैं, सुक्ख सुनौं जी । भोगनमैं लीन रह्यौं, अघ न गनौं जी ॥ हो० ॥ ३ ॥ नर-भवमैं आय लह्यौ, दासपनौ जी । बुधजनपै दया धारि, कर्म हनौं जी ॥ हो ० ॥ ४ ॥

(२२६)

मानौ मन भँवरसुजान हो राज, नरभव यौं थिर ना रहै हो राज ॥ मानौ० ॥ टेक ॥ काल करन कछु नाहिं विचारौ, कर ल्यो कारज आज ॥ मानौ० ॥ १ ॥ नव जौवन सुंदर तन संपति, दारा सुतकौ समाज । थिति पूरी करि करि नश जै है, परेई रहैंगे इलाज ॥ मानौ० ॥ २ ॥ निज हित तजि विषयन हित राचौ, औसर खोत अकाज । अनुचित काज करत हौ बुधजन, आवत क्यौं नहिं लाज ॥ मानौ० ॥ ३ ॥

(२२७)

राग—बिहाग ।

सुख पावौगे यासौं, मेरा सुघर चेतन गुन गाय रे ॥ सुख० ॥ टेक ॥ गायाँ बिना बिगार करत है, तुम बिन कहाँ कहुं कासौं ॥ चेतन० ॥१॥ जिन गाया तिन ही शिव पाया, सीख देत हूं तासौं ॥ चेतन० ॥२॥ यातैं सासं सास बुधजन जपि, गयौ न आवै सांसौं ॥ चेतन० ॥ ३ ॥

---

१ साससासमें—हरएक सांसमें । २ गई हुई सास फिर नहीं आती है ।

(२२८)

राग-जैजैवंती।

बोयौ[1] रे जन्म यौं ही, नीठ[2] नीठ पायौ छै भाई॥ ॥बोयौ०॥ टेक॥ जोयौ[3] नाहीं हेत वैन, जिनवर गायौ छै। धोयौ नाहिं पाप मैल, खोयौ पुन्य कुमायौ छै ॥ बोयौ० ॥ १ ॥ सोयौ तूं पराई सेज, गोयौ माल विरानौं छै। झूठ वोलि पीड़ि प्राणी, विभव वढ़ायौ छै॥ वोयौ०॥ २॥ मरि सो अनन्त काल, थावर वनायौ छै। अणुसौ मिनख भव, काकताल पायौ छै ॥ वोयौ० ॥ ३ ॥ जो बुध अवै चेतै, तौ न गमायौ छै। जिन पूज व्रत पाल, सिवसुखदायौ छै ॥ वोयौ० ॥ ४ ॥

(२२९)

राग-विलावल।

धन्य सुदत्त मुनि वानि सुनाई॥ धन्य० ॥ टेक ॥ मित्र कल्यान मिले मो अव ही, तिन मोहि मुनिकी छवि दरसाई ॥ धन्य० ॥ १ ॥ टरत शिकार स्वानगन छोड़े, सो अघ क्यौं हु न मिटत कदाई। ता कारन सिर छेदूं मेरौ, सो मुनि मेरी विपति मिटाई॥ धन्य० ॥ २ ॥ भूप जसोमति लखि अति हरष्यौ, उर तत्त्वारथ सरधा आई। मित्र सहित पुनि पंच शतक नृप, भोग विमुख ह्वै दिच्छा पाई ॥ धनि० ॥ ३ ॥ कुँवर अभयरुचि अर भगनीजुत, क्षुल्लक भये पुनि हुए मुनिराई। जोगी देवी मारदत्त नृप, वुधजन सुलटे सुरपद पाई॥ धनि० ॥ ४ ॥

१ खोया। २ कठिनाईसे। ३ देखा।

(२३०)

ऐसे गुरुके गुननकौं गावौ भविया ॥ ऐसे० ॥ टेक ॥ सदन त्यागि वनवास किश्रौ है, तन धन परिजन छोरि दिया ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ पोप निशा सरिता तट वैठे, नगन-रूप जिन ध्यान लिया ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ जेठ दिवस गिरि ऊपर ठाड़े, सूरज–सनमुख वदन किया ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ विरख तलैं सावन जव वरपत, डांस मछरकी विपति सया ॥ ऐसे० ॥ ४ ॥ शत्रु मित्र समभाव लये तिन, करुणा-वत्सल जीवदया ॥ ऐसे० ॥ ५ ॥ वाघ दुष्ट नर दोष करैं तव, ध्यानथकी नहिं भाग गया ॥ ऐसे० ॥ ६ ॥ विरत विना (?) भोजन नहिं जाचैं, भूख सहत वपु सूख गया ॥ ऐसे० ॥ ७ ॥ रतनत्रयजुत धर्म धरैं दश, निज पर-णति सुख मगन ठया ॥ ऐसे० ॥ ८ ॥ अहनिशि मुनिकौं वंदन मेरी, कर्म शत्रु जग जीति लया ॥ ऐसे० ॥ ९ ॥ कव दर्शन व्है ऐसे गुरुकौ, वुधजनके उर हरष भया ॥ ऐसे० ॥ १० ॥

(२३१)

राग–कालिंगड़ा।

मेरा तुमीसौं मन लगा ॥ मेरा० ॥ टेक ॥ याद नहिं भूल दावो सुणा(?), निशि दिन आनंद पगा ॥ मेरा० ॥ १ ॥ इस दुनियां विच ढूंढ़ थका मैं हो सांई, तुम विन कोइ न सगा ॥ मेरा० ॥ २ ॥ शांत भया उर तुम वच सुनतां, हो सांई जन्मांतर दुख दगा ॥ मेरा० ॥ ३ ॥ थारे चरन

विच चित बुधजनका, हो सांई निशिदिन रंग रगा ॥ मेरा० ॥ ४ ॥

(२३२)

म्हारा जी श्री जी मेरा भला हो किया ॥ म्हारा जी० ॥ टेक ॥ दुखिया था मैं नादिकालका, ताकौं तुमने सुखी किया ॥ म्हारा जी० ॥ १ ॥ अब लौं मिले तिन मो भरमाया, ज्ञान ध्यानकौं भूलि गया। तुम निरखत मेरा संशय भाग्या, निज पद निजमैं पाय लिया ॥ म्हारा जी० ॥ २ ॥ पर उपगारी सब सरदारी, या लखि बुधजन शरन गया। ज्ञान विना मैंने क्रम बांधे, तिनकौं खोलौ कीजे मया ॥ म्हारा जी० ॥ ३ ॥

(२३३)

राग—केसरयं।

देख्यौ थारौ सुद्ध सरूप रे, जिया म्हारा, ज्ञानिक दर्पण ऊजलो रे लाल जिया ॥ देख्यौ० ॥ टेक ॥ यौ ही थारौ सहज स्वभाव रे, जिया म्हारा। सब आ झलकै ज्ञानमैं, लाल जिया ॥ देख्यौ० ॥ १॥ करि करि ममत कुबाण[3] रे, जिया म्हारा। तू गति गति भरतो फिरै, लाल जिया ॥ देख्यौ० ॥ २ ॥ इन्द्री मन वसि आन रे, जिया म्हारा। ये नाखैं जग जालमैं, लाल जिया ॥ देख्यौ० ॥ ३ ॥ थारै देकौ ठेठकौ मिलाप रे जिया म्हारा। तुही छुड़ावै तौ छुटै, लाल जिया ॥ देख्यौ० ॥ ४ ॥ बुधजन आयौ संभाल रे

१ कर्म। २ जैसा। ३ बुरी आदत। ४ देहका। ५ हमेशाका।

(२४२)

राग-भैरों।

चरनन चिन्ह चितारि चित्तमैं, वंदन जिन चौवीस करूं ॥ टेक ॥ रिषभ वृषभ गज अजितनाथकै, संभवके हय बाज सरूं। अभिनंदन कपि कोक सुमतिकै, पद्म पद्मप्रभ पाय धरूं ॥ चरनन० ॥ १ ॥ स्वस्ति सुपारस चंद चंदकै, पुष्पदंत पद मत्स्य वरूं। सुरतरु शीतल दिनकमलसैं, श्रेयांस गैंडा वनचरूं ॥ चरनन० ॥ २ ॥ भैंसा वासु वराह विमलपद, अनंतनाथके सेहि परूं। धर्मनाथ कुलिस शांति हिरनजुत, कुंथुनाथ अज मीन करूं ॥ चरनन० ॥ ३ ॥ कलश मल्लि कूरम मुनिसुव्रत, नमि कमल सतपत्र तरूं। नेमि संख फनि पास वीर हरि, लखि बुधजन आनन्द भरूं ॥ चरनन० ॥ ४ ॥

(२४३)

राग-मल्हार।

झूम झूम बरसैं बदरवा, मुनिजन ठाड़े तरुवर तरवा ॥ टेक ॥ कारी घटा तसी बीजैं डरावैं, वे निधरक मानौं काठ पुतरवा ॥ झूम झूम० ॥ १ ॥ बाहरि को निकसै ऐसे मैं, बड़े बड़े घर हू गलि गिरवा। झंझा वायु वहै अति सियरी, हालैं निज बलके धरवा ॥ झूम० ॥ २ ॥ देखि उन्हें ज्यौं गाय सुनावैं, ताकौं तौं कर हूं नौछरवा। सफल होय सिर नाय परसिकैं, बुधजनके सब कारज सरवा ॥ झूम० ॥ ३ ॥

(बुधजनविलास पदसंग्रह)

(२३९)

जियरा रे तू तौ भोग लुभावै काल गमावै तौ या भली वात नहीं ॥ जियरा० ॥ टेक ॥ पापकौ नाहीं डर डोलत घर घर मूरखकौं सुध नाहिं, वंध वधाई ॥ जियरा० ॥ १ ॥ चौरासीमाहिं फिरि हुवो आरज नर, क्यौं न करै निज काज विपतिमैं कौन सहाई ॥ जियरा० ॥ २ ॥ जिनपद वंदि सिर तत्त्व प्रतीत कर, वुधजन सुखदाई मुक्ति लहाई ॥ जियरा० ॥ ३ ॥

(२४०)

राग-जंगला ।

अव जग जीता वे मांनूं ॥ अव० ॥ टेक ॥ सांत छवी थांकी जी, निरखते नैंना हो साईं । विसर गया छा सो निधि लीता वे मांनूं ॥ अव० ॥ १ ॥ धन्नि घरी म्हांकी जी, चरननकूं सिर नाया । वुधजनकौं थे कृतकृत कीता वे मांनूं ॥ अव० ॥ २ ॥

(२४१)

मैं तौ अयाना थाँनै ना जाना, जानै जो भला जीय सो ॥ मैं० ॥ टेक ॥ विन जानै दुख गति गतिमाहीं, लयौ काल अनन्तेकी तू जाना ॥ मैं० ॥ १ ॥ जिन जाना ते शिवपुरमाहीं, गया अष्ट कर्मनकौं भाना ॥ मैं० ॥ २ ॥ अव सिर नायकैं वुधजन जांचै, हो साइयां वहुरि

दुख पाये हैरानी ॥ तैं० ॥ ४ ॥ बुधजन औसर अजब मिल्यौ है, धरि सरधा जिनवानी ॥ तैं० ॥ ५ ॥

(२३७)

राग–सोरठ।

ठाइसौं गुनाकौ धारी जीव, कांई जाना कब होसी ॥ ठाइसौं० ॥ टेक ॥ भोग विसनमैं राचै माचै, मानुष भव यौं ही खोसी ॥ ठाइसौं० ॥ १ ॥ धारि उदासी ह्वै बनवासी, निज सुखमैं कर संतोसी । सांत सुभाव विमल जलसेती, भव भवके पातक धोसी ॥ ठाइसौं० ॥ २ ॥ वदन निहारूं ...न उर धारूं, ध्यान धरूं मन इंकोसी । ऐसी दशा कीजे बुधजनकी, ज्यां हो जाऊं निरदोसी ॥ ठाईसौं० ॥ ३ ॥

(२३८)

राग–परज।

तू आतम निरभय डोलिं नी । मोह गहल विच बात विगड़ती, मिथ्याभ्रम तजि घोलि नी ॥ तू० ॥ टेक ॥ तू चेतन यौ जड़ रूपी है, या उरमाहीं तोलि नी । तन अनन्त धारे छांडे तैं, ये अनादिका भोलि नी ॥ तू० ॥ १ परद्रव्य लेवेतें दुख पावै, राज गजनका (?) बोलि नी । यातें परतैं ममत न करिये, कर लै ऐसा कोलि नी ॥ तू० ॥ २ ॥ उपजै विनसै जरै मरै सो, पुदगलका झकझोलि नी । तू अविनाशी जिनवर भासी, बुधजन दिल विच खोलि नी ॥ तू० ॥ ३ ॥

देखो २८ मूलगुणोंका वारी प्रति । * ...ल न–अर्थात् निर्भय होकर

जिया म्हारा । ज्यौं निकसै भव जालसौं, लाल जिया ॥ देख्यौ० ॥ ५ ॥

(२३४)

राग–आसावरी ।

श्रीजी म्हांनै जाणौ छो तौ म्हांकी सुधि लीज्यो जी ॥ श्री० ॥ टेक ॥ म्हे भूल्या म्हानैं विधि वांध्या, थे छुटकारा दीज्यो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ अव म्हे शरणैं थांके आया, थे निरवाह करीज्यो जी । जोलौं रहै वुधजन जगमाहीं, तोलौं दर्शन दीज्यो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥

(२३५)

राग–धनासरी ।

मेरा सपरदेसी (?) भूल न जाना वे, सुनि लेना वे ॥ मेरा० ॥ टेक ॥ दृष्टा ज्ञाता नित्य निरंजन, तू है सिद्ध समाना ॥ मेरा० ॥ १ ॥ मोहित होय अनादि कालका, अजथा जथा पहचाना । राग दोष कीना परसेती, यातैं है मरजाना ॥ मेरा० ॥ २ ॥ तेरी भूलि मैटि तोहीमैं, करि तेरा सरधाना । वुधजन थिर व्है त्यागि अथिरता, पावौगे शिवथाना ॥ मेरा० ॥ ३ ॥

(२३६)

तैं ना जानी तोहि उपयोग हि देत दिखानी ॥ तैं० ॥ टेक ॥ ज्यौं फूलनमैं वास वसत है, त्यौं तू तनमैं ज्ञानी ॥ तैं० ॥ १ ॥ ये तेरे कवहूं मति मानै, क्रोध लोभ छल मानी ॥ तैं० ॥ २ ॥ जैसैं राजत सिद्ध मुकतिमैं, तैं इहि